Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

Khadkabas

श्री·

श्रीरघुनाथोजयति

खड्गाभ्यासः

सोर्ड एक्सरसाइज़

अर्थात् तलवार की कवाइद

स्वस्तिश्रीमन्महाराजाधिराजजम्बूकाश्मीराद्यने-
कदेशाधिपतिप्रभुवर श्रीयुतश्री ५ महाराजासा-
हबबहादुर जी की आज्ञानुसार

द्वारकानाथोपाध्यायने युद्धसंबंधी संपूर्ण
लोगों के उपकार के लिये सरल हिंदी भा-
षामें अनुवाद किया

जंबू

विद्याविलासनामकयंत्रालयमें बकशील
छमनजीकेअधिकारमें मुद्रित भया
संवत् १९१९ फाल्गुण प्रविष्ट २५ शुभम्

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

6563

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अभ्यासस्थल पर चांदमारी के उपयोग के प्रकार का निर्देशन

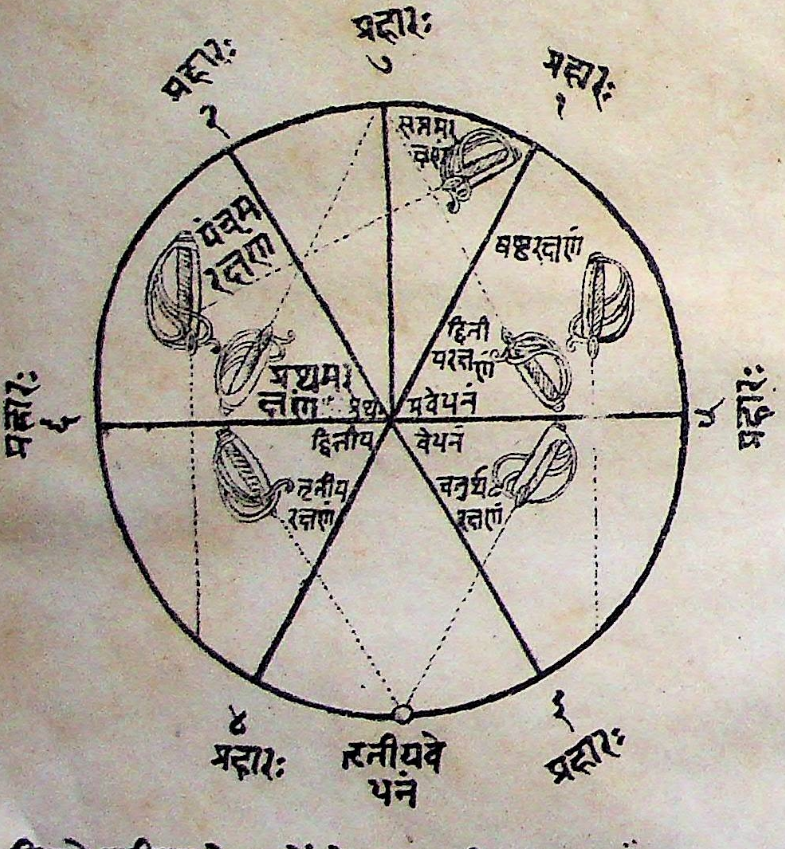

चित्रके खीचित रेखाओं से तत्कालीन क्रिया जानी जाती है

SPS
613.7 D 97 K
6563

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ग्रन्थ के प्राथमिक अभ्यासों के चित्र ॥

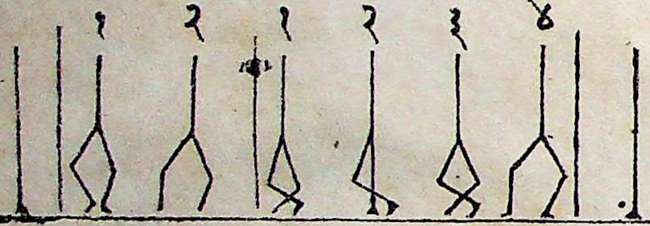

पहिली स्थितिः दोक्रियासे द्वितीयस्थितिः तोलन क्रिया पहिली स्थितिः

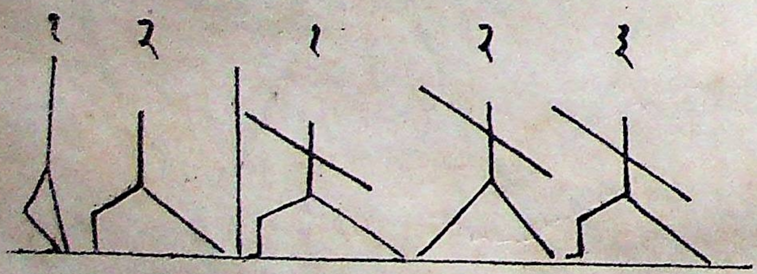

दोक्रियासे तृतीय स्थितिः द्वितीय व्यायाम क्रिया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्री

श्रीगणेशायनमोनमः

पदाति सैन्य संबंधी खड्गाभ्यासः

इन्फेन्ट्री सोर्ड एक्सर्साईज़

अर्थात् पैदल सिपाहियों की तलवार की कवाइद

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्राथमिक वर्णन के विषय में

खड्ग संबंधी मनुष्यों के तैयार करने के वास्ते अधोलिखित शिक्षा अत्यंत निश्चित और शीघ्रतम उपाय है और शिक्षक को यह बात स्पष्ट रूप से समझना चाहिये कि जब नूतन भट खड्ग के साथ अथवा खड्ग के बिना अपने सिद्ध वारक और शिक्षा के अभ्यास में पूर्ण हो जावें तब उन को पुनः उक्त प्रतिपाद्य यथार्थ क्रमका स्मरण रखना कुछ आवश्यक नहीं और जिसस्थलमें प्रत्येक **प्रहार कट वेथन** पाइन्ट और **प्रत्यला पेरी** दिखलाये जाते हैं उस जगह यदि **परीक्षाभ्यास** रिव्यूपकसर्साईज़ अर्थात् असलीमा की कवाइद में अच्छी तरह निपुण होवें तो उन का पुनः कथन भी अनावश्यक है और खड्ग संबंधी पुरुष को प्रत्येक में ऐसा अभ्यस्त होना चाहिये कि जिस में भिन्न २ प्रत्येक को और शिक्षक की इच्छा के अनुसार मिश्रित रूप से भी करने के योग्य होवें ॥ ॥ ॥

१-पहिला प्रकरण

व्यायामक्रिया और स्थितियों के वर्णन के विषय में

इन क्रिया ओं के द्वारा छाती फैलती है सिर उठता है कंधे पीछे की ओर होते हैं और पृष्ठ की मांस पेशियां प्रबल होती हैं ॥ ॥ ॥

जब **गुल्म स्वाउ सावधाना:** अटेन्शन् पर रहता है तब अधोलिखित सूचना दी जाती है ॥

प्रथम व्यायाम क्रिया ॥

फर्स्ट एक्स टेन्शन् मोशन ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अर्थात् पहिली व्यायाम क्रिया करो

एकम् वन् एक	एकम् वन् अर्थात् एक की आज्ञा पर हस्त बाहू और कंधों को सामने लाओ अंगुलियां मूढरूप से अग्रभाग में मिली रहें नख नीचे की ओर रहें इस के बाद उन बाहुओं को मण्डल रूप से सिर के ऊपर अच्छी तरह उठाओ और अंगुलियों के प्रान्त तब भी मिले रहें अंगुठे पीछे की ओर रहें केहुनियां पीछे की ओर दबी रहें कंधे नीचे को रहें॥
द्वे टू दो	द्वे – टू – अर्थात् दो की आज्ञा पर बाहुओं और अंगुलियों को झटका के द्वारा ऊपर की ओर पृथक करके तिर्यग् रूप से उन को नीचे तब तक दबाओ कि जब तक वे विस्तृत रूप से कंधों के बराबर पंक्ति में न होवें और तिस के बाद उस जगह से उन को क्रमशः उन के स्वाभाविक स्थिति। सावधानः अटेन्शन् पर लाओ छाती और गले को संभवानुसार ऊपर रखने के वास्ते प्रयत्न करो॥
त्रीणि थ्री तीन	त्रीणि-थ्री- अर्थात् तीन की आज्ञा पर हाथोंकी हथेलियों को सामने फेरो और बाहुओं के विस्तार द्वारा अंगुठों को पीछे दबाओ और तद उन की पीछे की ओर तब तक उठाओ कि जब तक वे सिर के ऊपर न मिल जावें अंगुलियां ऊपर की ओर रहें अंगुठे गडे हुये तिन में बायां सामने को रहें॥

चत्वारि फोर अर्थात् चारकी आज्ञा पर बाहु

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चत्वारि फोर वार	ओं और घुटनों को सीधे रख के नीचे की ओर न ब तक झुको कि जब तक हस्तों के द्वारा पाद न छू जावें और सिर को भी उसी दिशा में लाओ तिस के बाद बाहुओं को सामने की ओर उठा के तृतीय क्रिया थर्ड मोशन् ग्रहण करो ॥
पंच फ़ाइव पांच	पंच- फ़ाइव अर्थात् पांच की आज्ञा पर द्वितीयक्रिया सेकन्ड मोशन् के अनुसार सावधाना: अटेन्शन्कीस्थिति ग्रहण करो ॥

ये संपूर्ण क्रिया धीरे २ करनी चाहिये कि जिसमें मांसपेशियों भर में आयास पहुंचे द्वितीय और तृतीय क्रिया को भी २ सिरको संभवानुसार दहिनी अथवा बाईं ओर फेर कर के भी करनी चाहिये ये संपूर्ण क्रिया बिना विराम और भिन्न २ आज्ञावाक्यों के भी करना उचित है कि जिसमें परस्पर सहायता मिले और कभी २ पृथक् २ रूप से भी करनी चाहिये ॥

क्रिया त्रयेण प्रथम स्थिति:

फर्स्ट पोजिशन् इन् थ्री मोशन्स्

अर्थात् तीन क्रिया के द्वारा प्रथम स्थिति ग्रहण करो

एकं वन् एक	एकम् वन् अर्थात् एक की आज्ञा पर दोनो हाथों को झट पट पिछाड़ी लेजाओ वाम हस्त से दहिने बांह को केहुनी के ऊपर पकड़ो और दहिने हाथ से बायें को केहुनी के नीचे थाहो ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

द्वै टू दो	**द्वै** टू अर्थात् दो की आज्ञा पर पड़ियों के द्वारा घूम के बायें को आधा अर्थात् **अर्द्धमुख** हा फ फेस् हो जाओ कि जिस में बाईं पड़ी की पीठ दहिनी पड़ी के भीतर लगे सिर सामने की ओर अपनी ही स्थिति को ग्रहण किये रहे॥
त्रीणि थ्री तीन	**त्रीणि** थ्री अर्थात् तीन की आज्ञा पर दहिनी पड़ी को बाईं पड़ी के सामने लाओ पाद सम-कोण रूप से होवें दक्षिण पाद सामने को होवे और शरीर का बोझ बाईं टङ्गी पर रहे॥

क्रिया द्वयेन द्वितीय स्थितिः

सेकन्ड् पोजिशन् इन् टू मोशन्स्

अर्थात् दो क्रिया के द्वारा द्वितीय स्थिति ग्रहण करो

एकम् वन् एक	**एकम्** वन् अर्थात् एक की आज्ञा पर घुटनों को क्रमशः झुकाओ परंतु जहां तक हो सके वहां तक उन को उदाऽरवोवा पड़ियां न उठने पावें अथवा शरीर की कड़ी स्थिति न परिवर्तित होने पावे॥
द्वै टू दो	**द्वै** टू अर्थात् दो की आज्ञा पर दक्षिण पाद से बाईं पड़ी के बराबर फट पट अठारह इंच के लगभग का कदम ल्यो शरीर का बोझ बाईं टङ्गी पर रहे दहिना घुटना ढीला और नमनीय रहे॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तोलन क्रिया

बाल्लनस् मोशनूस्

अर्थात् पाद तोलने की क्रिया करो

एकम् वन् एक — **एकम् वन्** अर्थात् एक की आज्ञापर दक्षिण पाद को आठ इंच के लग भग बाई पड़ी के पीछे लेजाओ अंगुठा धीरे से भूमि को छुवे रहे पड़ी खड़ी रहे घुटने अच्छीतरह जुदे २ रहें॥

द्वे टू-दो — **द्वे टू** अर्थात् दो की आज्ञा परबाई टङरी के विस्तार द्वारा शरीर को क्रमशः उठाओ॥

त्रीणि थ्री तीन — **त्रीणि थ्री** अर्थात् तीन की आज्ञा पर बायें घुटने को झुका के **द्वितीय क्रिया** सेकंड मोशनूस् के एवं स्थिति को ग्रहण करो॥

चत्वारि फोर चार — **चत्वारि फोर** अर्थात् चारकी आज्ञा पर दहिनी टङरी को आगे बढ़ाओ और पैर को धीरे से पट को इस के बाद उस द्वितीय स्थिति सेकनड्पोजिशन् को ग्रहण करो कि जिस से **तोलन क्रिया** बालनूस् मोशनूस् प्रारंभ हुई थी॥

प्रथम स्थितिः फर्सट पोजिशन् अर्थात् प्रथम स्थितिः ग्रहण करोकी आज्ञा पर दोनों घुटनों को बढ़ाओ दहिनी पड़ी को बाईं पड़ी के पास लाओ॥

क्रियाद्वयेन तृतीयस्थितिः

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

थर्ड पोजिशन् इन् टू मोशन्स्

अर्थात् दो क्रिया के द्वारा तिसरी स्थिति ग्रहण करो ।

एकम् वन् एक	एकम् वन् अर्थात् एक की आज्ञा पर दहिण पार्श्व को सामने की ओर इस तरह घुमाओ कि जिस में कंधा और कुदुना पाद के मध्य भाग के ऊपर बराबर होवें शरीर तनी हुई रहे ॥
द्वे टू दो	द्वे टू अर्थात् दो की आज्ञा पर झट पट साम ने की ओर छत्तीस इंच के लग भग का कदम ल्यो कुदुना अंतः पाद के ऊपर बराबर रहे बा यां कुदुना और पाद सीधे और दृढ़ रहें पड़ियें एक रेखा में होवें शरीर सीधी रहें और कंधे बाईं ओर बराबर रहें ॥

द्वितीय व्यायाम क्रिया

सेकन्ड् एक्स् टेन्शन् मोशन्

अर्थात् दूसरी व्यायाम क्रिया करो

एकं वन्	एकम् वन् अर्थात् एक की आज्ञा पर बाहुओं को शरीर के सामने लाओ हाथ बंद अंगुलिपर्व ऊपर की ओर और कोट के निचले बुदाम के नीचे परस्पर स्पर्श किये हुये रहें तब उन हाथों को क्रमशः तब तक उठाओ कि जब तक कलाईयां भीतर की ओर करने से छाती को न छुवे केहुनियां ऊपर की ओर रहें तिसके बाद कंधों को जोर से पीछे की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एक — ओर दवा के हाथों को जुदा २ करो ओर केहु- नियों को दबा के इस क्रिया को समाप्त करो और अब बाहुओं ओर अंगुलियों को फट पट तिर्यग रेखा में करो दक्षिण कलाई सिर के बराबर ऊंची रहे कंधे नीचे रहें अंगुठे दक्षि- नी ओर झुके रहें ॥

नवीन सिपाहियों को यह क्रिया विभाग करके सिख- लानी चाहिये अर्थात् इस क्रिया के प्रथम अंश के वा- स्ते **सजन प्रिपेअर** अर्थात् तैयार हो यह आज्ञा दे- नी चाहिये इस आज्ञा पर हाथों को छाती तक लाके उ- नको जुदा करने के वास्ते पूर्ण रूप से तैयार रहना चा हिये ओर जब **एकम** वन् अर्थात् एक की आज्ञा दी दी जावे तब उस क्रिया को समाप्त करनी चाहिये ॥

हे-टू-दो — **हे** टू अर्थात् दो की आज्ञा पर दहिनी टङ्गरी को फैला के शरीर को उठाओ ॥

थ्रीःत्रि थ्री तीन — **थ्रीःत्रि** थ्री अर्थात् तीन की आज्ञा पर दहिने घुटने को झुकाओ ओर शरीर को इस तरह बढ़ाओ कि जिस में **प्रथम क्रिया** फर्स्ट मोशन् गृहीत होवे ॥

प्रथम स्थितिः फर्स्ट पोजिशन् अर्थात् प्रथम स्थितिः ग्रहण करो की आज्ञा पर इस तरह उछलो कि जिसमें बाहु पीछे हो जावें ओर दहिनी पड़ी बाईं पड़ी से मिल जावे कि जिस में पूर्वोक्त अनुसार **प्रथम स्थिति**

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फर्स्ट पोजिशन् गृहीत होवे ॥

सम्मुखे प्रएट अर्थात् सामने हो की आज्ञा पर झट पट सावधानाःअटेन्शन् की स्थिति पर आओ और हाथ पावों को एकही क्रिया में अपनी २ उचित जगह पर लाओ ॥

पूर्वोक्त शिक्षाओं में जो स्थितियां पोजिशन्स् और गतियां मूवमेन्टस् भिन्न २ प्रत्येक क्रियाओं के वास्ते भिन्न २ आज्ञा वाक्यों के द्वारा वर्णित हुई हैं वे स्वरूप प्रयोग की तैयारी के वास्ते कही गई हैं अब वे ही स्थितियां इस तरह से की जावें गी कि आज्ञावाक्य में केवल अपेक्षित स्थिति का नाम निर्देश किया जावे कि जिस में नवीन सिपाही लोग शरीर की डौल बिगाड़े बिना शीघ्रगति क्विकटाइम् में हढ़ता पूर्वक स्थिति परिवर्तन करने का अभ्यास सीखें उन के भेद के वास्ते आज्ञावाक्य केवल प्रथमः द्वितीयः तृतीयः फर्स्ट सेकंड थर्ड ये देनी चाहिये

स्थितियों के वर्णन के विषय में

प्रथमः फर्स्ट अर्थात् प्रथम की आज्ञा पर बाहुओं को पीछे की ओर उठाओ दहिनी एड़ी सामने रहे तिसके बाद एकबारगी प्रथमस्थितिः फर्स्ट पोजिशन् पर आओ ॥

द्वितीयः सेकन्ड अर्थात् दो इस आज्ञा पर द्वितीयस्थितिः सेकंड पोजिशन् पर आओ ॥

तृतीयः थर्ड अर्थात् तीन की आज्ञा पर तृतीयस्थितिः थर्ड पोजिशन् पर आओ ॥

प्रथमः फर्स्ट अर्थात् प्रथम की आज्ञा पर प्रथमस्थितिः फर्स्ट पोजिशन्स् पर आओ ॥

द्वितीयः सेकनड अर्थात् द्वितीय की आज्ञा पर द्वितीयस्थितिः सेकनड पोजिशन् पर आओ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तृतीयः थर्ड अर्थात् तीन की आज्ञा पर तृतीयस्थितिः थर्ड पोजिशनस् पर आओ॥

द्वितीयः सेकन्ड अर्थात् द्वितीय की आज्ञा पर द्वितीयस्थितिः सेकन्ड्पोजिशनस् पर आओ॥

एकाक्रमणम्

सिंगिल् अटैक्

अर्थात् एक बार आक्रम करो

इस आज्ञा पर दक्षिण पाद को उठाओ और झट पट भूमि पर पट को

द्विगुणाक्रमणम्

डबल् अटैक्

अर्थात् दो बार आक्रमण करो

इस आज्ञा पर दक्षिण पाद को पूर्ववत् उठाओ और दो बार भूमि पर पट को अर्थात् पहिली बार एड़ी को पट को और अब पंजे को॥

प्रसरन

एडवान्स्

अर्थात् आगे बढ़ो

इस आज्ञा पर दक्षिण पाद को छः इंच के लग भग के बराबर आगे बढ़ाओ और झट पट भूमि पर रक्खो तिस के बाद वाम पाद को भी धीरे से उतने ही अंतर के लग भग पर लाओ॥

एकाक्रमणम्

सिंगिल् अटैक्

अर्थात् एक बार आक्रमण करो

इस आज्ञा पर पूर्ववत् काम करना चाहिये॥

अपक्रमन

रिटायर

अर्थात् पीछे हटो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इस आज्ञा पर वाम पाद को छ इंच के लग भग के बराबर धीरे से पीछे हटाओ शरीर का भार और तौल बराबर इसी पर रहना चाहिये इस के बाद दक्षिण पाद को पीछे की ओर उतने ही अंतर पर लाओ और फट पट भूमि पर रक्खो ॥

द्विगुणा क्रमणम्

डबल अटैक

अर्थात् दो बार आक्रमण करो

इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से काम करना चाहिये ॥

सम्मुखे

फ्रगट

अर्थात् सामने हो

इस आज्ञा पर **सावधानाः** अटेनशन् अर्थात् सावधानता की स्थिति को ग्रहण करो ॥

खड्ग प्रयोग की तैयारी के निमित्त स्थिति और क्रियाओं की शिक्षा के पूर्व पूर्वोक्त विषय का प्रयोजन यह है कि जिस में अवयवों के द्वारा स्वतंत्रता और चतुराई के कार्य हो सकें क्यों कि यदि मांशपेशीय शक्ति के बल का अनुक्रम प्रकार से प्रयोग करने का ज्ञान होवेगा तो उन के पूर्ण आज्ञा वाक्य के द्वारा खड्ग प्रयोग सुगम और अधिक फलोत्पादक होवेगा और इस के सेवाय **प्रहार कट** और **रक्षण गार्ड** में भी उचित फल उत्पन्न कर सकेंगे और नवीन सिपाहियों को अपनी स्थिति में **आक्रमण अटाक** और **रक्षण डिफेनस्** के वास्ते बल संबंधी जो नमनीयता अपेक्षित होती है उस नमनीयता को वे लोग सुगमता पूर्वक प्राप्त करने के योग्य होते हैं ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शिक्षक को चाहिये कि स्थितियों की दृढ़ता के वास्ते प्रत्येक स्थितियों में नवीन सिपाहियों के कंधों को बराबर और दृढ़ रक्खे **द्वितीयस्थिति: सेकन्ड पोजिशन् और तोलन क्रिया** बेलन्स मोशन्स संबंधी निर्माण के परिवर्तनों में और जब **द्वितीय व्यायाम क्रिया सेकन्ड** एक्सटेन्शन्मोशन् की प्रथम स्थिति में रहते हैं तब भी दोनो हाथों से दहिनी कलाई को पकड़ के उस को बाई टङ्गी की दिशा में इस तरह लावे कि जिस में यदि दक्षिण बाहु उचित रूप से स्थापित होवे तो वह उस के बराबर होवे और प्रत्येक स्थितियों में नवीन सिपाही के शरीर को आघात देने के विना अंगुष्ठा उठाना और भूमि पर रखना भी सिखलाना चाहिये शरीर तुलित रूप से रहे और बोझ बाईं टङ्गी पर रहे कि जिस में दहिनी टङ्गी के द्वारा शत्रु के अंतर को शम कर सके अथवा उसके पहुंच से अपक्रमण कर सके **तृतीय स्थिति: थर्ड पोजिशन्** में सामने की ओर दहिनी टङ्गी करने के वास्ते निश्चित लंबाई नहीं नियत हो सकती क्यों कि यह विषय उस पुरुष की लंबाई और उस के आधीन है परंतु इतना लंबा कदम न लेना चाहिये कि जिस में उस की शीघ्रता और पूर्ण सुगमता से **प्रथम** अथवा **द्वितीयस्थिति: फर्स्ट** और सेकन्ड पोजिशन् शम हो सके ॥

जब इस प्रकरण की शिक्षा केवल अवयवों की शिक्षा निमित्त अभ्यस्त हो चुके तब यह शिक्षा वाम कंध और वाम पाद के द्वारा सामने की ओर और इसी तरह दहिने कंधे और दहिने पाद के द्वारा सामने की ओर करना चाहिये ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

२-दूसरा प्रकरण

खड्ग के साथ सज्ज होने की शिक्षा का वर्णन

चांदमारी के प्रयोजन और वर्णन के विषय में ॥

खड्ग के साथ वक्ष्यमाण शिक्षा चांदमारी के अनुसार होनी चाहिये और वह चांदमारी इस तरह से स्थापित होती है कि जिस में उसका केंद्र, मनुष्य की छाती के बराबर उंचा रहे और चांदमारी के केंद्र के नीचे से एक रेखा भूमिपर सामने की ओर सीधी खींची जावे तिस के बाद उस चांदमारी से १-फुट के अंतर पर नवीन सिपाही को **सावधानः अटेन्शन्** की स्थिति पर कर के इस तरह से खड़ा करना चाहिये कि जिस में उसकी बाईं एड़ी उस रेखा पर इस तरह से रहे कि जिस में जब वह **प्रथमस्थितिः फर्स्ट पोजिशन्** पर फिरे तब उस का दक्षिण पाद उस को आच्छादन कर लेवे। इस ग्रंथ के आदि में जो गोला कार चिन्ह लगा है उस से सातें **प्रहार कट** और **रक्षण गार्ड** मालुम होते हैं **प्रहार कट** केंद्र से किये गये हैं और रेखाओं के द्वारा पहिचाने जाते हैं और उन के नाम उस संख्या के अनुसार रक्खे गये हैं जिससे कि प्रत्येक **प्रहार कट** प्रारंभ होते हैं ॥

रक्षण गार्ड प्रहारों के सामने अवरण रूप खड्ग पकड़ने से होते हैं और वे रक्षण उन चिह्नित रेखाओं के द्वारा मालुम होते हैं जिनमें कि खड्ग की मुठिया लगी हुई हैं अनुमान करो कि वह गोलाकार चिन्ह मनुष्य की उंचाई के लगभग पर है तो वे प्रहार और रक्षण उस चिन्ह को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निर्दिष्ट रेखाओं के अनुसार नियमित किये जावेंगे और जब तक नवीन सिपाही प्रहारों की उचित दिशा और इसी तरह फल की अवगणना और रक्षण करने में कलाई की स्थिति को अच्छी तरह न जान लेवे तब तक इस प्रकार को छोड़ कर और किसी प्रकार से उस को न सिखलाना चाहिये ॥

वेधन पाइन्ट अर्थात् कोच उस तरह करना चाहिये जैसा कि चांद मारी में दिखलाया गया है और इन वेधनों में से **प्रथम वेधन** पाइन्ट में कलाई प्रथम संख्यांक की ओर होती है और खड्ग की धारा ऊपर दहिनी ओर होती है द्वितीय **वेधन पाइन्ट** में कलाई द्वितीय संख्यांक की ओर होती है और धारा ऊपर बांई ओर होतीहैतृतीय **वेधन पाइन्ट** में कलाई केंद्र में उठी हुई और धारा ऊपर दहिनी ओर होती है और वेधन उस प्रकार से करना चाहिये जैसा कि वृत्त रूप चिन्ह के प्रांतपर चिह्नित है ॥

चांद मारी में चिन्हों के कटी हुई रेखा ओं के द्वारा तैयारी की स्थिति यां मालुम होती हैं ॥

चांदमारी की **परीक्षाभ्यासव्यूपकसंज्ञ** अर्थात् अलीमा में **प्रहार कट रक्षण गार्ड** और **प्रत्यक्षपैरी** की ऊंचाई के निमित्त शिक्षकों के वास्ते पथदर्शक होती है क्यों कि नवीन सिपाही को यह बात स्पष्ट रूप से समझना चाहिये कि चांद मारी के द्वारा केवल यह बातमालुम होती है कि **प्रहार कट** प्रभृति को किस तरह करना चाहिये अर्थात् यह बात ठीक २ नही मालुम होती कि प्रहार प्रभृति किस जगह करना चाहिये क्यों कि यह बात परस्पर आक्रमण करने वाले दलों के कार्य के आधीन है जैसा कि प्रथम तृतीय और पंचम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रहार कट बाईं ओर शिर से ले पाद तक प्रत्येक अवयवों पर दिये जा सकते हैं और इसी तरह द्वितीय चतुर्थ और षष्ठ प्रहार भी दहिनी ओर दिये जा सकते हैं इन दोनों पार्श्वों के प्रहारों में से प्रथम पार्श्वीय अर्थात् वामपार्श्वीय प्रहार **अंतःपार्श्वीय प्रहार** इनसाइड कट कहलाते हैं द्वितीय अर्थात् दक्षिण पार्श्वीय प्रहार **बहिःपार्श्वीयप्रहार** और आउट साइड कट कहलाते हैं प्रथम तृतीय और पंचम उसके अनुकूल **अंतःपार्श्वीय रक्षण** इनसाइड गार्ड कहलाते हैं द्वितीय चतुर्थ और षष्ठ **बहिःपार्श्वीय रक्षण** आउट साइड गार्ड कहलाते हैं जब चांद मारी के सम्मुख स्थित होने का विषय नवीन सिपाही के मन में अच्छी तरह बैठ जावे तब उसको चांद मारी के सम्मुख अधिक अभ्यास करने का कुछ प्रयोजन नहीं परंतु शिक्षक को यह बात विचार लेना चाहिये कि यह यथार्थ रूप से **रक्षण गार्डों** के करने में और **प्रहारकट** करने में धार की उचित दिशा देने में निश्चित परिपक्व भया कि नहीं॥

एकही समय में अनेक नूतन भटों की शिक्षा के वास्ते अभ्यंतरीय रेखाओं के सहित इस ग्रंथ के चांदमारी के चित्र के इसकी प्रतिकृति अभ्यास की जगहों में बनानी चाहिये उनके केंद्र भूमि से चार २ फुट ऊंचे रहें और उनका व्यास चोदह इंच रहे॥

प्रहार कट रक्षण गार्ड बेधन पाइन्ट और रक्षण पेरी के वर्णन के विषय में

यह काम पहिले पैदल और चांदमारी के सम्मुख करना चाहिये॥

जब नूतन भट तैयारी की क्रियाओं में अच्छी तरह निपुण हो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जावें तब उन को खड्ग ले के उस के प्रबल और दुर्बल भाग से परिचित होना चाहिये खड्ग का प्रबल अर्द्धभाग वह है जोकि मुठिया की ओर रहता है दुर्बल अर्द्ध भाग वह है जो कि नोक की ओर रहता है **प्रहार कट** करने अथवा रोकने के वास्ते इन भेदों का ज्ञान बहुत आवश्यक है क्यों कि ये बातें उन के उचित प्रयोग के आधीन है मुठिया से ऊपर की ओर शत्रु के फल को रोकने के वास्ते रक्षण बल क्रमशः घटता है क्यों कि **प्रहार कट** नोक की ओर से होता है और प्रहार करने में नोक से नीचे की ओर यह बढ़ता है खड्ग के प्रबल भाग को चाहिये कि शत्रु के शस्त्र के दुर्बल भाग को प्राप्त करे और **प्रहार कट** नोक के आठ इंच के भीतर से देना चाहिये कि जिस में खड्ग आप निकल आवे **प्रहार कट** करने में यह बात लाभ कारक होती है कि खड्ग का प्रबल भाग शत्रु के दुर्बल भाग से टक्कर खावे कि जिस में उस का रक्षण दब जावें॥

खड्ग निष्कासयत
ड्रा सोईस
अर्थात् तलवारें निकालो

इस आज्ञा पर बायें हाथ से खड्ग के मियान को ठीक २ मुठिया के नीचे पकड़ो और तब उस को कटि की उचाई के बराबर ऊँची करो तिस के बाद झट पट दहिने हस्त को शरीर के पास लाकर मुठिया को पकड़ो और उसी समय उस को पीछे की ओर फेरो और उस हस्त को केहुनि की उचाई के बराबर ऊंचा करो बांह शरीर से लगी रहे इस के बाद दूसरी क्रिया मोआफ़िक के द्वारा हस्त के विस्तार से मियान में से खड्ग को निकालो यार पीछे की ओर रहे और तब उस हस्त को तब तक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नीचे करो कि जब तक मुठिया ठीक २ ठुड्डी के नीचे न होवे फल लंब रूप से रहे धार बाईं ओर रहे अंगुठा मुठिया के पार्श्व पर फैला रहे केहुनी शरीर से मिली हुई रहे कि जिस में **प्रकाशयन खड्गम् दिकवरसोर्ड** की स्थिति प्राप्त हो जावे इस के बाद तृतीय **क्रिया भाग्रान्** के द्वारा कलाई और केहुनी को दक्षिण कटि के बराबर पंक्ति में लाओ केहुनी पीछे की ओर रहे और बांह उत्तमा विस्तृत रहना चाहिये कि जिस में वह सुगमता पूर्वक रहे हस्त खड्ग को मृदुता पूर्वक पकड़े रहे परंतु अंगुलियों को खींच कर प्रबल रूप से पकड़ने को सज रहे और अब खड्ग का ऊपरला पासा दक्षिण स्कंध के निम्नस्थान में होगा धार सामने की ओर होगी कि जिस में **नोलयत खड्गम् केरी सोर्ड** की स्थिति प्राप्त हो जावे ज्यों ही तलवार निकाली जाती है त्यों ही वाम हस्त **सावधानः अटेन्शन्** की स्थिति पर लाया जाता है खड्ग के निष्कासन और प्रवेशन की द्वितीय और तृतीय क्रियाओं के वास्ते यदि **टू** अर्थात् दो और **थ्रीरी थ्री** अर्थात् तीन ये शब्द कहे जावें तो यह प्रकार अभ्यास के वास्ते उत्तम होगा ॥

वक्रं खड्गम्
स्लोप सोर्ड
अर्थात् तलवार तिर्छी करो

इस आज्ञा पर हाथ को सामने केहुनी के बराबर लाओ केहुनी शरीर से मिली हुई रहे खड्ग कांधे पर रहे धार सामने की ओर रहे ॥

प्रवेशायत खड्गम्
रिटर्न सोर्ड
अर्थात् तलवार मियान में रक्खो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इस आज्ञा पर अंगुष्ठिया को वामस्कंध के निम्न स्थल पर लाओ वाम हस्त से एवेवन मियान को उठाओ फल लंब रूप से रहे हस्त का एष्ट भाग सामने की ओर रहे इस के बाद कलाई को झट पट फेर के नोक को मियान में रक्खो और तब धार को पीछे की ओर तब तक फेरो कि जब तक हस्त और केहुनी शरीर के बाहर एक रेखा में बराबर न होवें तिस के बाद द्वितीय क्रिया के द्वारा खड्ग को मियान में पुनः स्थापन करो हस्त अंगुष्ठिया पर रहे तृतीय **क्रिया मोशन** के द्वारा हस्त **सावधानाः अटेनूशन** की स्थिति पर पीछे लाये जाते हैं ॥

खड्गम् निष्कासयत

ड्रा सोर्ड

अर्थात् तलवार को निकालो

इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से काम करना चाहिये ॥

वक्र खड्गम्

स्लोपसोर्ड

अर्थात् तलवार को तिर्छी करो

इस आज्ञा पर भी पूर्वोक्त प्रकार से काम करना चाहिये ॥

संतिष्ठत

स्टेनडुपटईज

अर्थात् आराम से खड़े हो ॥

इस आज्ञा पर यदि वे लोग संश्लिष्टक्रम क्लोज आर्डर में होवें तो तलवार **वक्रम स्लोप** की जगह पर रहेगी यदि विस्तृतक्रम में होवे तो हस्त पकड़ लाये जाते हैं बायां हाथ दहिने को आच्छे रहता है तलवार का एष्ट भाग बांई बाहु के भितरी ओर रहता है दोनो क्रम अर्थात् संश्लिष्ट और विस्तृत क्रमों में दहि-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ना कदम पीछे लाया जाता है बायां घुटना नियमानुसार झुका हुआ रहता है ॥

सावधानाः

अटेन्शन्

अर्थात् सावधान हो

इस आज्ञा पर वक्र खड्गम् स्लोप सोर्ड की स्थिति पर लाओ ॥

खड्गाभ्यासार्थं सज्जत

प्रिपेअर फार सोर्ड एकसरसीइज़

अर्थात् तलवार की कवाइद के वास्ते तैयार हो

इस आज्ञा पर शरीर और पैरों को प्रथमस्थितिः पसीटफोजिशन् पर फेरो बायां हस्त कटि पर इस तरह से रक्खो कि जिस में अंगुष्ठ पीछे की ओर रहे ॥

द्वितीय चित्र देखो

दक्षेऽन्तरम् शोधयत

राइटप्रूव डिसटेनस्

अर्थात् दहिनी ओर अंतर को शुद्ध करो ॥

इस आज्ञा पर प्रकाशांतखड्गम् रिकवर सोर्ड करो तर्जनी अंगुली और अंगुष्ठ मुठिया के बराबर विस्तृत रहें अंगुष्ठ पृष्ठ भाग पर रहे मुठियाका प्रान्त तली में रहे और तब द्वितीयक्रिया के द्वारा बांह को दहिनी ओर फैलाओ और खड्ग को कंधे के बराबर समान दिशा में नीचे करो धार पीछे की ओर रहे बायांस्कंध सामने की ओर बराबर रहे ॥

इस शिक्षा में और इस के सेवाय और शिक्षाओं में भी जहां कि द्वितीय क्रिया अपेक्षित होती है वहां द्वैकु अर्थात् दो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यह शब्द तब तक अवश्य देना चाहिये कि जब किसी इशारा देने वाले मनुष्य के द्वारा अभ्यास न होवे।

वक्रम खड्गम्
स्लोप सोर्ड
अर्थात् तलवार तिर्छी करो

इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से काम करना चाहिये॥

सम्मुखेऽन्तरंशोधयत
फ्रण्ट प्रूव डिसटेन्स
अर्थात् सामने की ओर अंतर को शुद्ध करो

इस आज्ञा पर तलवार को पूर्ववत उठाओ जिस के बाद द्वितीय क्रिया के द्वारा **तृतीयस्थितिः थर्ड पोजिशन्** अर्थात् तृतीय स्थिति पर कदम बढ़ाओ बाहु को फैलाओ जिस के बाद खड्ग के आग्र को चांदमारी के केंद्र की ओर नीचे करो धार दहिनी ओर रहे॥

तृतीय चित्र देखो

वक्रम खड्गम्
स्लोप सोर्ड
अर्थात् तलवार तिर्छी करो

इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से काम करना उचित है

आक्रमत
एसालट
अर्थात् आक्रमण करो

इस आज्ञा पर बाहु को सामने की ओर उठाओ कलाई प्रथम संख्या के सामने रहे केहुनी गोलाकार चित्र के केंद्र की ओर अधिक झुकी रहे खड्ग का पृष्ठ नोक के निकट कंधे पर रहे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पकम वन पक

पकम् वन् अर्थात् एक की आज्ञा पर बाहू को फैला के जिस तरह चित्र में प्रथम संख्या से चतुर्थ संख्या की ओर दिखलाया है उसी तरह दहिनी ओर से बाईं ओर का तिर्यग दिशा में सामने की ओर **प्रहार कट** करो और ज्यों ही नोक मंडल से बाहर हो जावें त्यों ही अंगुलिपर्वों को ऊपर की ओर फेर के तलवार को बराबर इस तरह लेते आओ कि जिस में उसका नोक वामे कंधे के पीछे की ओर हो कर उसी जगह पर वह ठहरे और बाईं ओर झुकी रहे कलाई द्वितीय संख्या के सामने रहे ॥

दे दू दो

दे-दू- अर्थात् दो की आज्ञा पर द्वितीय संख्या से तृतीय संख्या की ओर **प्रहार कट** करो और कलाई को इस तरह फेरो कि जिस में तलवार तब तक चली जावे कि जब तक नोक दक्षिण कटि के नीचे न आवे और नीचे की ओर रहे केहुनी भीतर की ओर झुकी रहे कलाई द्वितीय संख्या की ओर रहे ॥

त्रीणि त्री तीन

त्रीणि त्री अर्थात् तीन की आज्ञा पर तिर्यग रूप से ऊपर की ओर तृतीय संख्या से द्वितीय संख्या की ओर **प्रहार कट** करो और कलाई को तब तक बराबर ले जाओ कि जब तक खड्ग का नोक वाम कटि के नीचे न आ जावे और नीचे की ओर होवे केहुनी झुकी और उठी हुई होवे कलाई प्रथम संख्या की ओर होवे ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चतुर्थ फोर चार	**चत्वारि फोर** अर्थात् चार की आज्ञा पर नियम रूप से उपर को चतुर्थ संख्या से प्रथम संख्या की ओर **प्रहार कट** करो और अंगुलिपर्वों को नीचे की ओर फेरो खड्ग की धार दहिनी ओर होवे और नोक दहिने कंधे के ऊपर पीछे को रहे केहूनी झुकी हुई और कलाई पंचम संख्या की ओर होवे ॥
पंच फाइव पांच	**पंच फाइव** अर्थात् पांच की आज्ञा पर पंचम संख्या से षष्ट संख्या की ओर समान रूप से **प्रहार कट** करो और अंगुलिपर्वों को ऊपर की ओर फेरो खड्ग की धार बाईं ओर होवे नोक बायें कंधे के ऊपर पीछे की ओर होवे केहूनी झुकी हुई और कलाई षष्ट संख्या की ओर रहे ॥
षट सिक्स छ	**षट सिक्स** अर्थात् छ की आज्ञा पर षष्ट (षष्टम संख्या) संख्या की ओर समान रूप से **प्रहार कट** करो और उस हस्त को सप्तम संख्या की दिशा की ओर लाओ खड्ग उसी रेखा में सिर के ऊपर रहे नोक पीछे की ओर नीचे रहे धार ऊपर की ओर रहे ॥
सप्तम सेविन् सात	**सप्तम सेविन्** अर्थात् सात की आज्ञा पर सप्तम संख्या से उस मंडल के केंद्र की ओर ऊर्ध्वाधर रूप से नीचे की ओर **प्रहार कट** करो और बाहु को फैलाये हुए रहो अंगुष्ठ मुष्ठिका के पृष्ठ भाग पर रहे और बायां कंधा पीछे की ओर अच्छी तरह दबा हुआ रहे ॥

प्रथम वेधनम
फर्स्ट पाइन्ट

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अर्थात् पहिला हूल मारो

इस आज्ञा पर तलवार के धार को दहिनी ओर ऊपर फेरो ओर कलाई को दक्षिण नेत्र के सामने ऊपर भीतर की ओर खीचो कलाई अच्छी तरह झुकी ओर उठी हुई होवे बांया कंधा थोड़ा सा आगे लाओ छाती भीतर की ओर रहे ॥

है टू दो — है टू अर्थात् दो की आज्ञा पर बाहु को फैलाओ ओर चांदमारी के केंद्र की दिशा में झट पट सामने की वेथन फाइन्ट करो कलाई उगी हुई ओर प्रथम संख्या की ओर झुकी हुई होवे बांया कंधा पीछे की ओर इस तरह दबा हुवा होवे कि जिसमें दहिना कंधा आगे की ओर बढ़ जावे क्यों कि इसी के द्वारा यथोलिखित द्वितीय ओर तृतीय वेथन पाइन्ट बराबर किये जाते हैं ॥

द्वितीयवेथनम्

सेकन्ड पाइन्ट

अर्थात् दूसरा हूल मारो

इस आज्ञा पर धार को बांई ओर ऊपर फेरो ओर केहुनी को भीतर की ओर खींच के शरीर से लाओ कलाई इस के ऊपर इतनी ऊंची उठाओ कि जिस में छाती के बराबर सामने होवे अंगुष्ठा मुठिया के दहिनी ओर होवे ॥

है टू दो — है टू अर्थात् दो की आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से वेथन पाइन्ट करो कलाई उठी हुई ओर द्वितीय संख्या की ओर झुकी हुई होवे धारा उठी हुई अंगुलिपर्व नीचे की ओर होवें ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तृतीय वेधनम्

थर्ड पाइन्ट

अर्थात् तीसरा हूल मारो

इस आज्ञा पर बाहु को भीतर की ओर तब तक खींचो कि जब तक कलाई कटि के ऊपर भाग को न स्पर्श करे अंगुठा मुठिआ के बाईं ओर होवे धार उठी हुई दहिने को रहे बायां कंधा आगे को निकला हुआ और कटि पीछे को दबी हुई होवें ॥

हे-टू-दो { **हे-टू-** अर्थात् दो की आज्ञा पर चांदमारी में निर्दिष्ट दिशा की ओर **वेधन** पाइन्ट करो और कलाई को केंद्र की ओर उठाओ ॥

अवन

डिफेन्ड

अर्थात् बचाव करो

इस आज्ञा पर धार को बाईं ओर फेर के **प्रथम रक्षण फर्स्ट गार्ड** करो अंगुठा मुठिया को पकड़े हुये रहे केहुनी को भीतर खींच कर शरीर से मिलाओ कलाई सामने की ओर रहे और तलवार को चिह्नित तिर्यग रेखा के सामने उस तरह रक्खो जैसा कि चांदमारी में **प्रथम रक्षण फर्स्टगार्ड** के निमित्त मुठिआ युक्त तलवार से दिखलाया गया है इस में और अग्रिम रक्षण अर्थात् जो द्वितीय तृतीय प्रभृति रक्षण गार्ड से द्योतित हैं उन में प्रान्त सामने की ओर अधिक बढा हुआ होता है बायां कंधा बाईं ओर के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रक्षणों में अच्छीतरह पीछे रहना है और दक्षिण ओर के रक्षणों में ओर इसी तरह सप्तम रक्षण सेविनूथगार्ड और अरक्षण पेरी में भी वह कथा अधिक आगे की ओर लाया जाता है ॥

द्वितीयम्
सेकनूउ
अर्थात् दूसरा रक्षण करो

इस आज्ञा पर कलाई को फेरो अंगुलिपर्व ऊपर की ओर रहें खड्ग की धार दहिनी ओर रहे और खड्ग को इस तरह स्थापन करो कि जिस में वह **द्वितीय रक्षण सेकनूउगार्ड** देखिल तिर्यग् रेखा प्रभृति के सामने होवे ॥

तृतीयम्
थर्ड
अर्थात् तीसरा रक्षण करो

इस आज्ञा पर कलाई को फेरो धार बांई ओर कंधे की ऊंचाई के लग भग के बराबर ऊंची रहे नोक दहिनी ओर नीचे रहे खड्ग की स्थिति प्रभृति **तृतीय रक्षण थर्ड गार्ड** की तरह रहे ॥

चतुर्थम्
फोर्थ
अर्थात् चौथा रक्षण करो

इस आज्ञा पर केहुनी को उठा ओ कलाई ओर धार को दहिनी ओर फेरो नोक बांई ओर होवे खड्ग प्रभृति की स्थिति **चतुर्थ रक्षण फ़ोर्थ गार्ड** की तरह होवे ॥

पंचम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फिफथ्

अर्थात् पांचवां रक्षण करो

इस आज्ञा पर धार को बाईं ओर फेरो कलाई शरीर के सम्मुख बाईं ओर कंधे के बराबर ऊंची रहे खड्ग उस लंब रूप रेखा के सामने होवे जो कि मूठिआ युक्त हो के **पंचम रक्षण फिफथगार्ड** द्योतन करती है ॥

षष्ठम

सिक्स्थ

अर्थात् छठवां रक्षण करो

इस आज्ञा पर कलाई को झुका के धार को दहिनी ओर इस तरह फेरो कि जिस में तलवार उस लंब रूप रेखा प्रभृति के सामने होवे जिस से कि **षष्ठ रक्षण सिक्स्थगार्ड** द्योतित होता है ॥

सप्तमम्

सेविन्थ

अर्थात् सातवां रक्षण करो

इस आज्ञा पर कलाई को ऊपर उठाओ और दक्षिण कांधे आगे करो केहुनी ऊपर और पीछे की ओर अच्छी तरह दबी हुई होवे तलवार उस तरह रहे जैसा कि **सप्तम रक्षण सेविन्थ गार्ड** में दिखलाया गया है ॥

अरक्षत

पेरी

अर्थात् हूल बचाओ ॥

इस आज्ञा पर कलाई को प्रायः दहिनी कंधे के साथ मिली हुये नीचे करो धार दहिनी ओर रहे कटि पीछे की ओर दबी हुई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

होवे और खड्ग की मुठिया प्रथम संख्या के सामने रहे ॥

हे
दू
दो

इस आज्ञा पर कलाई को इस तरह फेरो कि जिस में नो कलाई और पीछे होवे और शरीर के बाई ओर से दहिनी ओर को एक मण्डल कर के अपनी प्राथमिक स्थिति को ग्रहण करो॥

वक्र खड्गम्

स्लोप सोउस्

अर्थात् कंधे पर तिर्छी तलवार करो

इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से काम करना उचित है ॥

सातो प्रहार कट और तीनों वेधन पाइन्ट का वर्त्तमान प्रकार से भी अभ्यास करना चाहिये आक्रमत एसाल्ट अर्थात् आक्रमण करो की आज्ञा पर वे बिना परस्पर किसी वास्तविक अवसान के नियमित क्रम में मिलाये जाते हैं और कलाई के सामयिक और उचित परिवर्तन के द्वारा प्रहार कट परस्पर मिलाये जाते हैं प्रहार कट प्रबल रूप से देना चाहिये धार आगे की ओर रहे कलाई सम्भवानुसार सामने की ओर रहे और फिरने में दूसरे प्रहार के वास्ते तैयार रहे धार पीछे की ओर प्रायः उसी रेखा में खींची हुई होवे बांह थोड़ी सी झुकी हुई होवे कि जिस में कलाई स्वतंत्रता पूर्वक अपना व्यापार कर सके केहुनी और कंधा प्रहार देने के वास्ते बल देते हैं इस वास्ते इन को इस क्रिया में अत्यंत बढ़ना चाहिये जब कभी नवीन सिपाही आक्रमण करने की अवस्था में तलवार चलाने में भूल जावे तब उस को मिला के अ-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भ्यास करें और उन को कई वार दोहराया करे और इसी तरह **द्विथा टू** और **त्रिथा थ्री** को और **पंचथा फाइव** और **षष्ठथा सिक्स** को भी मिला के करे परंतु इस बात में सावधानता रखनी चाहिये कि थार चांद मारी की रेखाओं के सापेक्ष होवे और कलाई प्रत्येक **प्रहार कट** के करने में केंद्र की ओर चले ॥

नवीन सिपाही को अब भी चांद मारी के सम्मुख खड़ा करा के तीनो **युद्धरक्षण एंड्र-गेजिंड-गार्ड** सिखलाना चाहिये **प्रहार कट** और **रक्षण गार्ड** को सापेक्ष रूप से मिला के अभ्यास करना चाहिये कि जिस में प्रत्येक **प्रहार कट** के वास्ते उसके मन में **रक्षण गार्ड** अच्छी तरह बैठ जावे प्रहार और वेधन कलाई के द्वारा सामने की ओर बांह के पूर्ण विस्तार से किये जाते हैं

और **तृतीयस्थिति: थर्डपोजिशन** में प्रत्येक **प्रहार कट** मंडल के केंद्र से बढ़ के न देना चाहिये **रक्षण गार्ड** और **प्ररक्षण पेरी प्रथम स्थिति: फर्स्ट पोजिशन** में करना चाहिये कि जिस में प्रत्येक वेधन के वास्ते तैयार रहे ॥

रक्षन
गार्ड
अर्थात् बचाओ

इस आज्ञा पर बांह को चांदमारी के केंद्र की ओर बढ़ा कर खड्ग के नोक को बढ़ाओ थार नीचे की ओर रहे तिसके बाद विराम के बिना शरीर को झुका के छाती और गले को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रह्नन
गार्ड
अर्थात बचाओ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अंतःरक्षन
इन्साइड् गाई
अर्थात भीतर बचाओ

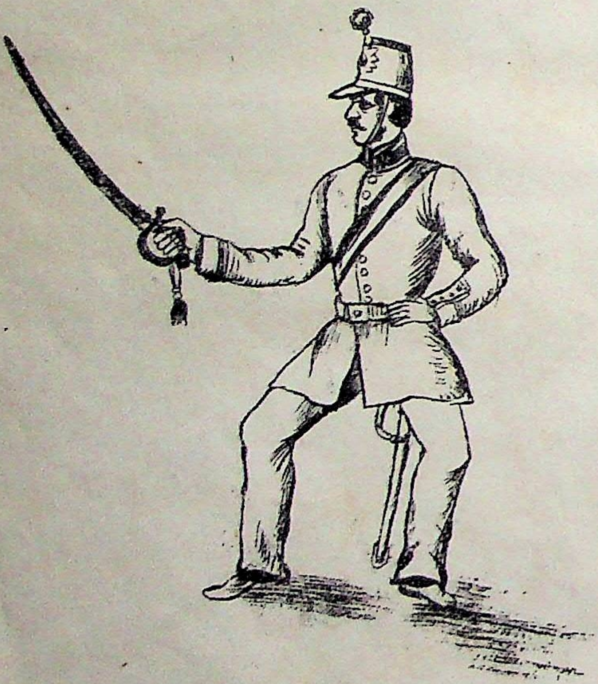

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बहिःरक्षन
औट् साइड् गाई
अर्थात् बाहर बचाओ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भीतर की ओर खींचो और बायें कंधे को किंचित आगे की ओर लाओ और फट पट कदम बढ़ा के द्वितीय स्थिति सेकन्ड पोजिशन् पर आओ केहुनी झुकी और उठी हुई इस तरह होवे कि जिसमें वह हस्त प्रायः दक्षिण पाद के उपर होवे और खड्ग की धारा ऊपर की ओर फिरी हुई होवे नोक नीचे रहे और बांई ओर झुकी हुई होवे खड्ग और बांह के द्वारा जो कोण बना हुआ है उस में से चांदमारी स्पष्ट रूप से देख पड़ती रहे मुठिया प्रथम संख्या की ओर झुकी होवे नोक चतुर्थ संख्या के बाईं ओर नीचे रहे॥

अन्तः रक्षन

इनसाइडगार्ड

अर्थात् भितरी ओर बचाओ

इस आज्ञा पर कलाई को नीचे करके सिर और शरीर को उठाओ अंगुलि पर्व नीचे और पाद के ऊपर रहे खड्ग की नोक सामने रहे धार बाईं ओर रहे हस्त कलाई के बराबर नीचे परंतु थोड़ा ऊपर और कटि के सामने रहे और इसी समय **एकाक्रमणम् सिंगिलअटैक्** अर्थात् एकाक्रमण करो इसमें कलाई चतुर्थ संख्या की ओर और नोक प्रथम संख्या की ओर झुकती है॥

बहिः रक्षन

औटसाइडगार्ड

अर्थात बाहरी ओर बचाओ

इस आज्ञा पर अंगुलिपर्वों को ऊपर करके कलाई को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फेरो खड्ग की धारा दहिनी ओर रहे और फिर एकाक्रमणम् सिंगिल् अटाक् करो इसमें हस्त तृतीय संख्या की ओर नोक द्वितीय संख्या की ओर झुकी रहे ॥

एकधा प्रहरन कट वन् अर्थात् एकवार करो	इस आज्ञा पर एकवार काटो और तृतीय स्थितिः थर्ड पोजिशन् पर आओ ॥
प्रथम रक्षणम् फर्स्ट गार्ड अर्थात् पहिला रक्षणकरो	इस आज्ञा पर प्रथम रक्षण करो और प्रथम स्थिति फर्स्ट पोजिशन् पर आओ ॥
द्विधा प्रहरन कट टू अर्थात् दूसरी वार काटो	इस आज्ञा पर दूसरी वार काटो और तृतीय स्थितिः थर्ड पोजिशन् पर आओ ॥
द्वितीय रक्षणम् सेकन्ड गार्ड अर्थात् दूसरा रक्षण करो	इस आज्ञा पर द्वितीय रक्षण करो और प्रथम स्थितिः फर्स्ट पोजिशन् पर आओ ॥
त्रिधा प्रहरन् कट थ्री अर्थात् तीसरी वार काटो	इस आज्ञा पर तीसरी वार काटो और तृतीय स्थितिः थर्ड पोजिशन् पर आओ ॥
तृतीय रक्षणम् थर्ड गार्ड अर्थात् तीसरा रक्षण करो	इस आज्ञा पर तीसरा रक्षण करो और प्रथम स्थितिः फर्स्ट पोजिशन् पर आओ ॥
चतुर्धा प्रहरन कट फोर अर्थात् चौथीवार काटो	इस आज्ञा पर चौथी वार काटो और तृतीय स्थितिः फर्स्ट फोजिशन् पर आओ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चतुर्थ रक्षणम् फोर्थ गार्ड अर्थात् चौथा रक्षण करो	इस आज्ञा पर चौथा रक्षण करो और प्रथम स्थितिः फर्सट् पोजि-शन् पर आओ॥
पंचथा प्रहरन कट फाइव अर्थात् पांचईं वार काटो	इस आज्ञा पर पांचईं वार काटो और तृतीय स्थितिः थर्ड पोजिशन् पर आओ॥
पंचम रक्षणम् फिफथ् गार्ड अर्थात् पांचवां रक्षण करो	इस आज्ञा पर पांचवां रक्षण करो और प्रथम स्थितिः फर्सट् पो जिशन् पर आओ॥
षष्ठथा प्रहरन कट सिक्स अर्थात् छटईं वार काटो	इस आज्ञा पर छटईं वार काटो और तृतीय स्थितिः थर्ड पोजिशन् पर आओ॥
षष्ठ रक्षणम् सिक्सथ् गार्ड अर्थात् छठवां रक्षण करो	इस आज्ञा पर छठवां रक्षण करो और प्रथम स्थितिः फर्सट पो शिन् पर आओ॥
सप्तथा प्रहरन कट सेविन् अर्थात् सातवीं वार काटो	इस आज्ञा पर सातवीं वार काटो औ-र तृतीय स्थिति थर्ड पोजिश-न् पर आओ॥
सप्तम रक्षणम् सेविन्थ् गार्ड अर्थात् सातवां रक्षण करो	इस आज्ञा पर सातवां रक्षण करो और प्रथम स्थितिः फर्सट् पो जिशन् पर आओ॥
प्रथम वेधनम् फर्सट् पाइन्ट अर्थात् पहिली हूल मारो	इस आज्ञा पर प्रथम स्थितिः फ र्स पोजिशन् में होके प्रथम वेध ने फर्सट पाइन्ट के वास्ते तैयार हो॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दे टू दो	इस आज्ञा पर प्रथम वेथनम् फर्सट पाइनूट अर्थात् प्रथम हूलमारो और तृतीयस्थिति थर्डपोजिशान् पर आओ ॥
द्वितीय वेथनम् सेकनूड पाइनूट अर्थात् दूसरी हूल मारो	इस आज्ञा पर प्रथम स्थिति: फर्सट पोजिशान् में हो के द्वितीयवेथन सेकनूड पाइनूट अर्थात् दूसरे हूल के वास्ते तैयार हो ॥
दे टू दो	इस आज्ञा पर द्वितीयवेथनम् सेकनूड पाइनूट अर्थात् दूसरा हूल मारो और तृतीय स्थिति थर्ड पोजिशान् पर आओ ॥
तृतीय वेथनम् थर्ड पाइनूट अर्थात् तीसरी हूल मारो	इस आज्ञा पर प्रथम स्थिति फर्सट पोजिशान् में हो के तृतीय वेथन थर्ड पाइनूट अर्थात् तीसरे हूल के वास्ते तैयार हो ॥
दे टू दो	इस आज्ञा पर तृतीय वेथन थर्ड पाइनूट अर्थात् तीसरी हूल मारो और तृतीयस्थिति थर्ड पोजिशान् पर आओ ॥
परजन पेरी अर्थात् हूल बचाओ	इस आज्ञा पर प्रथम स्थिति फर्सट पोजिशान् में हो के परजनए पेरी अर्थात् हूल बचाने के वास्ते तैयार हो ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दे- टू- दो	इस आज्ञा पर **प्रहस्ता पेरी** अर्थात् हूल बचाओ ॥
रजन-गार्ड अर्थात् बचाओ	इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से काम करना चाहिये ॥
वकं रवङ्गम् स्लोप सोर्डस तलवार तिर्छी करो	इस आज्ञा पर भी पूर्वोक्त प्रकार से काम करना चाहिये ॥

यहां तक केवल शिक्षाही समझना चाहिये और नवीन सिपाही को इस का यथार्थ काम स्मरण रखना अब आवश्यक नहीं और जब यह बात निश्चित हो जावे कि वह सिपाही इस विषय को समझता है और यथार्थ रूप से करभी सकता है तब उस को अधोलिखित प्रकरण का परीक्षाभ्यास करने की शिक्षा देनी चाहिये ॥

३-तीसरा प्रकरण

परीक्षाभ्यास रिव्यू अर्थात् मलीमा की कवाइद का वर्णन

वक्ष्यमाण शिक्षा उसी प्रकार से की जाती है जिस तरह कवाइद का अंतिम भाग किया जाता है केवल भेद इतना ही है कि **प्रहार कट** के बाद द्वितीय आज्ञा वाक्य की प्रतीक्षा बिना उस के सायेन रक्षण किया जाता है और आक्रमण की प्रत्येक क्रिया के बाद उछल के सायेन रक्षण की स्थिति पर आते हैं ॥

३कि **रक्षत**

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गार्ड
अर्थात् बचाओ
इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से काम करना चाहिये

अंतः रक्षन
इनूसाइड गार्ड
अर्थात् भीतरी ओर बचाओ
इस आज्ञा पर भी पूर्वोक्त प्रकार से काम करना उचित है

बहिः रक्षन
औट्साइट गार्ड
अर्थात् बाहर की ओर बचाओ
इस आज्ञा पर भी पूर्वोक्त प्रकार से काम करो

एकम वन् अर्थात् एक की आज्ञा पर एकधा प्रहार करो और **प्रथम रक्षण** फर्स्ट गार्ड पर आओ प्रहार पूर्वोक्त प्रकार से **तृतीय स्थितिः** थर्ड पोजिशन् में करो और रक्षण गार्ड करने में उछल कर **प्रथम स्थितिः** फर्स्ट पोजिशन् पर आओ और इसी तरह संपूर्ण प्रहार कट और रक्षण गार्ड में करना उचित है **वेधन** पाइन्ट अर्थात् हूल मारने और **प्ररक्षण** पेरी अर्थात् हूल बचाने में भी करना चाहिये॥

द्वे-टू-अर्थात् दो की आज्ञा पर **द्विधा प्रहरन** कट टू करो और द्वितीय रक्षण सेकन्ड गार्ड पर आओ॥

त्रीणि-थ्री-अर्थात् तीन की आज्ञा पर त्रिधा प्रहरन कट थ्री करो और तृतीय रक्षण थर्ड गार्ड पर आओ॥

चत्वारि-फोर अर्थात् चार की आज्ञा पर चतुर्धा प्रहरन कट फोर करो और चतुर्थ रक्षण फोर्थ गार्ड पर आओ॥

पंच फाइव अर्थात् पांच की आज्ञा पर पंचधा प्रहरन करो॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और पंचम रक्षण फिफ्थगार्ड पर आओ॥

षट् सिक्स अर्थात् छः की आज्ञा पर षष्ठथा प्रहरन करो और षष्ठ रक्षण सिक्स्थगार्ड पर आओ॥

सप्त सेविन् अर्थात् सात की आज्ञा पर सप्तथा प्रहरन कट सेविन् करो और सप्तम रक्षण सेविन्थगार्ड पर आओ॥

वेधनानि पाइन्टस् अर्थात् हूल मारो की आज्ञा पर प्रथम वेधनम् फर्सट् पाइन्ट के वास्ते तैयार हो॥

प्रथम फर्सट् अर्थात् पहिली हूल मारो की आज्ञा पर प्रथम वेधन करो और द्वितीय वेधनम् सेकंड पाइन्ट के वास्ते तैयार हो॥

द्वितीय सेकंड अर्थात् दूसरी हूल मारो की आज्ञा पर द्वितीय वेधन करो और तृतीय वेधनम् पाइन्ट के वास्ते तैयार हो॥

तृतीयम् थर्ड अर्थात् तीसरी हूल मारो की आज्ञा पर तृतीय वेधन करो और प्ररक्षण पेरी के वास्ते तैयार हो॥

प्ररक्षन पेरी अर्थात् हूल बचाने की आज्ञा पर पूर्ववत् काम करो॥

रक्षन गार्ड अर्थात् बचाओ की आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से काम करना उचित है॥

वक्रखड्गम् स्लोप सोर्ड अर्थात् कांधे पर तिर्छी तलवार करो इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से काम करना उचित है॥

यद्यपि प्रहार कट और रक्षण गार्ड एक से ले सात तक नियमित क्रम से हैं पर तौ भी नवीन सिपाही को चाहिये कि शिक्षक की आज्ञानुसार उन के परिवर्तन करने का अभ्यास करें क्यों कि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इस से नवीन सिपाही बचाने वाली स्थिति को अत्यंत सरलता और शीघ्रता पूर्वक ग्रहण करने के योग्य होता है अथवा अपने आक्रमण की गति को भिन्न रूप करने के योग्य होता है इस काम के वास्ते **खड्गाभ्यासः सोर्डप्रेकटिस** अर्थात् तलवार का अभ्यास करो यह सूचना दी जाती है और **रक्षण गार्ड** से प्रारंभ हो ताहै भितरी और बाहरी प्रहार एक से ले छ तक किये जाते हैं परंतु प्रत्येक प्रहार से रक्षण की स्थिति पर आजाना चाहिये और इसी तरह बाहरी प्रहार आभ्यंतरीय रक्षण से किये जाते हैं और आभ्यंतरीय प्रहार बाहरी रक्षण से किये जाते हैं अथवा जब कोई एकही प्रहार और उसका सापेक्ष रक्षण अपेक्षित होता है तब संख्या दी जाती है और **परीक्षाभ्यास रिव्यूएक्सरसाइज़** की तरह किया जाता है परंतु जब **प्रहार कट** टङ्गी के वास्ते किया जाता है अर्थात् **तृतीया थ्री** और **चतुर्था फोर** का प्रहार होता है तब संख्या देने के पूर्व **जंघाधम फार दी लेग** अर्थात् टङ्गी के वास्ते यह सूचना अवश्य देनी चाहिये और उसी के अनुसार नीचे की रक्षण भी करना उचित है ॥

४— चौथा प्रकरण

आक्रमण अटैक और रक्षण डिफेनस् करने के विषय में ॥

जब नवीन सिपाही **प्रहार कट** और उन के सापेक्ष रक्षण गार्ड करने में पूर्ण रूप से शिक्षित हो जावें तब उन को चाहिये कि उन क्रियाओं को अधो लिखित दो प्रकार अभ्यासानु-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सार अभ्यास करें प्रहार कट और वेथन पाइन्ट तृतीयस्थिति थर्ड पोजिशन् में करना चाहिये रक्षण गार्ड और अरक्षण पेरी प्रथम स्थिति फर्स्ट पोजिशन् में करना उचित है॥

अब गुल्म स्क्वाड अर्थात् टोली दो चार अथवा अधिक श्रेणियों में बनाई जावेगी और वकं स्वड्स् स्लोप सोर्ड्स् अर्थात् कंधे पर तिर्छी तलवार करके शिक्षक की दृष्टि के सामने खडी होंगी इन टोली और युगलों के बीच में चार कदम का अंतर रहना चाहिये जब इस तरह का निर्माण हो चुके तब द्वितीय और तृतीय प्रकरणों की संपूर्ण कवाइद को भिन्न२ आज्ञा वाक्यों के द्वारा अथवा सूचक मनुष्य के द्वारा करना चाहिये इन दोनों प्रकारों में से प्रथम प्रकार उत्तम उपाय है क्यों कि इस में खड्ग वाला मनुष्य जिस दिशा की ओर कार्य करने को चाहता है उस दिशा की ओर अपनी दृष्टि रखने के योग्य होना है॥

सम्मुखः श्रेणिः दक्षतः पृष्ठपार्श्वे

फ्रण्टरांक राइट अबोट फेस ⁝⁝

अर्थात् सामने की टोली दहिनी ओर से पीछे की ओर मुख करो

इस आज्ञा पर वे युगल दहिनी ओर से पीछे की ओर मुख करते हैं

आक्रमणार्थं रक्षणार्थंच-सज्जत

प्रिपेअर फार अटाक पेंड डिफेन्स्

अर्थात् आक्रमण और रक्षण करने के वास्ते तैयार हो॥

इस आज्ञा पर युगल प्रथम स्थिति फर्स्ट पोजिशन् पर होके परस्पर अवरोध करते हैं॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अंतरं शोधयत

क्लूजडिसटेन्स

अर्थात् अंतर को शुद्ध करो

इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से युगल अंतर को शुद्ध करनेहैं परंतु प्रथमस्थितिः फर्स्टपोजिशन् में ही रहने हैं॥ इस बात में अत्यंत सावधानता रखनी चाहियेकिआमने सामने के युगलों में उचित अंतर रहे कि जिस में प्रत्येक तलवार के नोक से दूसरे का कबजा छू जावे कटि पीछे की ओर अवनत रह दबी रहे सम्मुखश्रेणी अपनी तलवारों को ऊपर रखनी है पृष्ठश्रेणी राहदेती है अथवा अपेक्षित परिमाण के अनुसार आगे बढ़तीहै इसी वास्ते जब तक संपूर्ण लोग अपने २ उचित अंतर पर दृढ़ता पूर्वक नहीं खडे होते तब तक शिक्षक **वक्रखड्गम्** स्लोप् सोर्ड्स् यह आज्ञा नहीं देता॥

वक्रं खड्गम्

स्लोप् सोर्ड्स्

अर्थात् कांधे पर तलवार को तिर्छी करो

इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से काम करना चाहिये

रक्षत

गार्ड्

अर्थात् बचाओ

इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से करना उचित है॥

अंतः रक्षत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इन्साइटगार्ड

अर्थात् भीतर की ओर बचाओ

यह काम एकाक्रमण सिंगिल् पटाक से होता है और वे युगल मिती रक्षण पर प्रवृत्त होते हैं तलवारें नोक से आठ इंच के लग भग पर मिल जाती हैं॥

बहिः रक्षत

आउटसाइटगार्ड्

अर्थात् बाहरी ओर बचाओ

एकाक्रमण सिंगिलअटाक् से बहिः रक्षण पर परिवर्तित हो तलवार प्रभृति पूर्ववत रहे॥

वाम कपोलम्

लेफट चीक्

अर्थात् वाम कपोल पर करो॥

सम्मुखश्रेणि

फ्रण्टरांक

अर्थात् सामने की कतार

का काम

पूर्वोक्त आज्ञा पर

एकधा प्रहरत

कट वन्

अर्थात् एक बार काटेगी

पृष्ठश्रेणि

रिअररांक

अर्थात् पिछली कतार

का काम

पूर्वोक्त आज्ञा पर

प्रथम रक्षणं

फर्सट गार्ड

अर्थात् प्रथम रक्षण

करेगी॥

दक्षकपोलं

राइट चीक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अर्थात् दहिने कपोल पर करो

इस आज्ञा पर
द्वितीय रक्षणम्
सेकंड गार्ड
अर्थात् द्वितीय रक्षण
करेगी

इस आज्ञा पर
द्विथा प्रहरन
कट टू
अर्थात् दूसरी बार का
टेगी

मणिबंधम्
रैसट
अर्थात् कलाई पर करो

इस आज्ञा पर
त्रिथा प्रहरन
कट थ्री
अर्थात् तीसरी बार
काटेगी

इस आज्ञा पर
तृतीय रक्षणम्
थर्ड गार्ड
अर्थात् तृतीय रक्ष
ण करेगी

जंघा
लेग
अर्थात् टङरी पर करो

इस आज्ञा पर
चतुर्थ रक्षणम्
फोर्थ गार्ड
अर्थात् चतुर्थ रक्षण
करेगी

इस आज्ञा पर
चतुर्था प्रहरन
कट फोर
अर्थात् चौथी बार
काटेगी

वामपार्श्वम्
लेफट् साइड
अर्थात् बायें पासे पर करो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इस आज्ञापर
पंचथा प्रहरन
कट फाइव
अर्थात् पांचवईं वार काटेगी

इस आज्ञापर
पंचम रक्षणम्
फिफ्थ् गार्ड
अर्थात् पंचम रक्षण करेगी

दक्षपार्श्वम्
राइट साइड
अर्थात् दहिने पासे पर करो

इस आज्ञा पर
षष्ठ रक्षणम्
सिक्स्थ गार्ड
अर्थात् छठवां रक्षण करेगी

इस आज्ञा पर
षड्था प्रहरन
कट सिक्स
अर्थात् छठईं वार काटेगी

शीर्षम्
हेड
अर्थात् सिर पर करो

इस आज्ञा पर
सप्तथा प्रहरन
कट सेविन्
अर्थात् सातवीं वार काटेगी

इस आज्ञा पर
सप्तम रक्षणम्
सेविन्थ गार्ड
अर्थात् सातवां रक्षण करेगी

प्रथम वेधनं
फर्स्ट पाइन्ट

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अर्थात् प्रथम हूल मारो

इस आज्ञा पर	इस आज्ञा पर
प्ररक्षण	**प्रथम वेथन**
पेरी	फर्स्ट् पाइन्ट
अर्थात् हूल बचा देगी	अर्थात् पहिली हूल मारेगी
और तृतीय -	और **प्ररक्षण** पेरी
वेथन थर्ड पाइन्ट	अर्थात् हूल बचाने के वास्ते तैयार होगी॥
के वास्ते तैयार होगी	

तृतीय वेथन

थर्ड पाइन्ट

अर्थात् तीसरा हूल मारो

इस आज्ञा पर	इस आज्ञा पर
तृतीय वेथन	**प्ररक्षण**
थर्ड पाइन्ट	पेरी
अर्थात् तीसरा हूल मारेगी	अर्थात् हूल बचावेगी और **तृतीय**
और **प्ररक्षण** पेरी	**वेथन** थर्ड पाइन्ट
अर्थात् हूल बचाने के वास्ते तैयार होगी	के वास्ते तैयार होगी

रक्षत

गार्ड

अर्थात् बचाओ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से काम करना उचित है ॥

वक्रं खड्गम्

स्लोप् सोर्डस्

अर्थात् तलवार को कांधे पर तिर्छी करो

इस आज्ञा पर भी पूर्वोक्त प्रकार से काम करना चाहिये ॥

पूर्वोक्त प्रत्येक **वेथन पाइन्ट** अर्थात् हूल मारने की आज्ञा मिलने पर बचाने वाले युगल को चाहिये कि उछल कर **प्रथम स्थिति: फर्सट पोजिशन्** अर्थात् पहिली डौल ग्रहण करे और आक्रमण करने वाला युगल आक्रमण के निमित्त **दे-टू** अर्थात् दो के शब्द की प्रतीक्षा करे परंतु **दारुाभ्यास स्टिक प्रेकटिस्** अर्थात् लकड़ी की कवाइद में **वेथन पाइन्ट** अर्थात् हूल एक बार दिया जाता है ॥

इस अभ्यास में आक्रमण और रक्षण की गतियों का क्रमश: उसी तरह होता है जैसा कि **परीक्षाभ्यास रिव्यूपकससाइज़** अर्थात् असीमा की कवाइद में होता है और वे गतियां **प्रहार कट** और **रक्षण गार्ड** के प्रयोग को दिखलाती हैं और दोनों को परंतु तिन में से विशेष करके प्रहारों को यथार्थ रूप से उसी तरह करना चाहिये कि जिस तरह चांदमारी पर करते हैं अर्थात् एक तलवार दूसरी तलवार के ऊपर न पड़ने पावे परंतु कलाई खूब ऊपर रहे और अपेक्षित गति को फिर प्रारंभ से करने को तैयार रहे और इस बात में अत्यंत सावधानता रखनी चाहिये कि हूरी शुरु होने के बाद जब तक दूसरी आज्ञा न मिले तब तक दो युगल अपने वाम पाद को न हटावें **सम्मुख श्रेणी फ्रन्टराक**

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अनवर्तनीय रूप से प्रारंभ करती है परंतु दोनों को समान अभ्यास करना चाहिये इस अभ्यास में **द्वितीय वेधन** सेकंडपाइन्ट छोड़ दिया जाता है क्यों कि **प्ररक्षण** पेरी अर्थात् हूल बचानाही शत्रु को वे शस्त्र कर देता है॥

यथोलिखित अभ्यास से आक्रमण करने रक्षण करने और फट फट फिर **वेधन** पाइन्ट करने की शिक्षा का अभ्यास होता है और प्रशस्त दलों की योग्यतानुसार शीघ्रता पूर्वक क्रमिक आज्ञाओं के द्वारा आठ अथवा दस बार करना चाहिये यह अभ्यास संगीन और भाला के सन्मुख भी रक्षण के वास्ते अत्यन्त उपकारक होता है॥

वेधन पाइन्ट अर्थात् हूल मारने और प्ररक्षण पेरी अर्थात् हूल बचाने के विषय में

रक्षत

गार्ड

अर्थात् बचाओ

इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से काम करना उचित है

सन्मुख श्रेणी	**पृष्ठ श्रेणी**
फ्रण्ट रांक	रियर रांक
सामने की कतार	पिछली कतार

तृतीय वेधनम्

थर्ड पाइन्ट

अर्थात् तीसरी हूल मारो

इस आज्ञा पर	इस आज्ञा पर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तृतीयवेथन
थर्ड पाइन्ट
अर्थात् तीसरी हूल मारने के वास्ते तैयार होगी

प्रत्क्षण
पेरी
अर्थात् हूल बचाने के वास्ते तैयार होगी ॥

विध्यत
पाइन्ट
अर्थात् हूल मारो

इस आज्ञा पर बांई टउ-री बढ़ा के शरीर को आगे बढ़ावेगी और **तृती यवेथन** थर्ड पाइन्ट अर्थात् तीसरा हूल मारे गी और जब **प्रत्क्षण पेरी** अर्थात् बचाना हो गा तब बांह को पीछे खींचे गी और **प्रत्क्षण पेरी** के वास्ते तैयार होवेगी ॥

इस आज्ञा पर **प्रत्क्ष ण** पेरी अर्थात् हूल बचावेगी और **तृती-यवेथन** थर्ड पा-इन्ट अर्थात् तीसरा हू ल के वास्ते तैयार होगी

विध्यत
पाइन्ट
अर्थात् हूल मारो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इस आज्ञा पर दहिनी टउ.री को ऊंचे बच्चा के शरीर को पीछे खींचेगी और प्र त्यरा पेरी प्रभृति करेगी॥

इस आज्ञा पर हनी य वेथन पाइंट इन्ट अर्थात् नीसरी हूल प्रभृति करेगी॥

रक्षण

गार्ड

अर्थात् बचाओ

इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से काम करना उचित है

वक्र खड्गम्

स्लोप सोर्ड

अर्थात तलवार को कांधे पर तिर्छी करो

इस आज्ञा पर भी पूर्वोक्त प्रकार से काम करना चाहिये

सब लोगों से समान अभ्यास कराना चाहिये परंतु इस बात की सूचना देनी चाहिये कि कौन श्रेणी प्रारंभ करेगी और सम्मुख **श्रेणी** फ्राएट रौंक को जब तक दूसरी आज्ञा न मिले तब तक पूर्वोक्त प्रकार से काम करना चाहिये गुल्म कभी २ इस काम के वास्ते एकही श्रेणी में रचित होते हैं और प्रत्येक स्थिति में संपूर्ण **रक्षण** गार्ड और **वेथन** पाइन्ट सिखलाये जाते हैं विशेष करके प्रथमस्थिति में और **वेथन** पाइन्ट करने में **प्रथम स्थिति** फर्सट् पोजिशनस्

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

में तृतीय स्थिति: थर्ड् पोजिशन् में और द्वितीय स्थिति सेकन्ड् पोजिशन् में तृतीय स्थिति थर्ड पोजिशन् में बारंबार परिवर्तन करना उचित है ॥

५-पांचवां प्रकरण

दण्ड स्टिक अर्थात् लकड़ी की शिक्षा के विषय में

उक्त शिथिल अथवा स्वतन्त्र अभ्यास प्रकार के बिना खड्गाभ्यास सोर्ड एक्सरसाइज़् अर्थात् तलवार की कवाइद उचित रूप से नहीं आसकती इस वास्ते जिस तरह पटे बाजी की विद्या को प्राप्त करने के वास्ते पटे व्यवहृत होते हैं उसी तरह इस काम के वास्ते भी तलवार की जगह दण्ड अर्थात् लकड़ी का व्यवहार करना चाहिये परंतु एतादृश अभ्यास आरम्भ होने के पूर्व अधोलिखित आक्रमण अटाक और रक्षण डिफेन्स् के वास्ते पंच मेलन का अच्छी तरह अभ्यस्त और सीख लेना उचित है वह दण्ड चालीस इंच के लग भग के बराबर लंबा होना चाहिये परंतु इतना पतला न होवे कि जिस में लचक आवे चमड़े के कब्जे केवल उतने ही ब-

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

डे रहें कि जिस में हस्त को आच्छादन करें न कि उस को बंद कर लेवें और उस कपट हस्त को कभी न छोड़ना चाहिये क्यों कि उस से प्रहार कट और हूल मारने के अभ्यास में वे लोग निश्चित रूप से करने के योग्य होते हैं यही निर्माण आक्रमण अटाक रक्षण डिफेन्स और हूल शोधन में भी सतत रखना चाहिये और प्राथमिक दोनों अभ्यास उसी तरह से करना चाहिये कि जैसा तलवार के साथ चतुर्थ प्रकरण में लिखा है तृतीयाभ्यास में प्रहार कट तृतीय स्थिति सेटउ-री पर किये जाते हैं और जो कि सिर और गले पर किये जाते हैं सो लाघव और सावधानता पूर्वक प्रथम स्थिति से किये जाते हैं क्यों कि दोनों प्रहार कट एकही समय पर किये जाते हैं और वह युगल जो कि टउ-री पर प्रहार करता है उस को आत्म रक्षण के वास्ते शक्ति नहीं रहती परंतु जब उचित अंतर पर से वार लगे तब टउरी के हटा लेने से फल दिखलाना चाहिये चतुर्थ और पंचम अभ्यासों में **आक्रमण अटाक** नियमानुसार तृतीय स्थिति से और **रक्षण** डिफेन्स अर्थात् बचाव प्रथम स्थिति से करना उचित है ॥

प्रथमाभ्यासः

फर्स्ट प्रेकटिस

अर्थात् पहिला अभ्यास करो

रक्षन

गार्ड

अर्थात् बचाओ

इस आज्ञा पर वे ही वाक्य और भाव सतत की जाती हैं जो कि चतुर्थ प्रकरण में आक्रमण और रक्षण के वास्ते लिखी गई हैं ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तृतीयाभ्यासः

थर्ड प्रेकटिकल

अर्थात् तीसरा अभ्यास करो

सम्मुखश्रेणी	**पृष्ठश्रेणी**
फ्रण्ट रांक	रियर रांक
अर्थात् सामने की कतार	अर्थात् पिछली कतार

रक्षत

गार्ड

अर्थात् बचाओ

इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से काम करना चाहिये

जंघां

लेग

अर्थात् टंगड़ी पर करो

इस आज्ञा से टंगड़ी पर चतुर्थ प्रहार करेगी	इस आज्ञा से शिर पर सप्तथा प्रहार करेगी-

अन्तः रक्षत

इन्साइड गार्ड

अर्थात् भीतर की ओर बचाओ

इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से काम करना उचित है

जंघां

लेग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अर्थात् टउ-री पर करो

इस आज्ञा से पष्ठथा टउ-रीपर प्रहार करेगी	इस आज्ञा से गले पर पष्ठथा प्रहार करेगी-

बहिः रक्षत

आउटसाइड गार्ड

अर्थात् बाहर की ओर बचाओ

इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से काम करना चाहिये

जंघा

लेग

अर्थात् टउ-री पर करो

इस आज्ञा से टउ-री पर पंचथा प्रहार करेगी	इस आज्ञा से गले पर पंचथा प्रहार करेगी-

रक्षत

गार्ड

अर्थात् बचाओ

इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से काम करना उचित है

वक्र खड्ग

स्लोप सोर्उस

अर्थात् कांधे पर तिर्छी तलवार करो

इस आज्ञा पर भी पूर्वोक्त प्रकार से काम करना चाहिये -

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चतुर्थाभ्यास:

फोर्थ प्रेकटिस्

अर्थात् चौथा अभ्यास करो

रक्षत

गार्ड

अर्थात् बचाओ

इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से काम करना उचित है

शीर्षम्

हेड

अर्थात् सिर पर करो

इस आज्ञा पर सव्यथा प्रहार करेगी

इस आज्ञा पर सव्यम रक्षण करेगी-

शीर्षं

हेड

अर्थात् शिर पर करो

इस आज्ञा पर सव्यम रक्षण करेगी

इस आज्ञा पर सव्यथा प्रहार करेगी

जंघा

लेग

अर्थात् टंगरी पर करो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इस आज्ञा पर चतुर्था प्रहार करेगी

इस आज्ञा पर सप्तम रक्षण करेगी

जंघाम्

लेग्

अर्थात् टङ्गी पर करो

इस आज्ञा पर सप्तम रक्षण करेगी

इस आज्ञा चतुर्था प्रहार करेगी

शीर्षम्

हेड्

अर्थात् सिर पर करो

इस आज्ञा पर सप्तथा प्रहार करेगी

इस आज्ञा पर सप्तम रक्षण करेगी

शीर्षम्

हेड्

अर्थात् सिर पर करो

इस आज्ञा पर सप्तम रक्षण करेगी

इस आज्ञा पर सप्तथा प्रहार करेगी

रक्षन

गार्ड

अर्थात् रक्षन बनाओ

इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से काम करना चाहिये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्कंधखड्गम्

स्लोप् सोर्ड्स्

अर्थात् कांधे पर तिर्छी तलवार करो

इस आज्ञा पर इस की क्रिया पूर्वोक्त प्रकार से करना उचित है

पंचमाभ्यासः

पि. फ़्थ प्रेकटिस्

अर्थात् पांचवां अभ्यास करो

रक्षण

गार्ड

अर्थात् बचाओ ॥

इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से काम करना चाहिये

शीर्षम्

हेड

अर्थात् सिर पर करो

इस आज्ञा पर सत्वथा प्रहार करेगी

इस आज्ञा पर सम्यक र-क्षण करेगी

शीर्षम्

हेड

अर्थात् सिर पर करो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इस आज्ञा पर सम्म रक्षण करेगी

इस आज्ञा पर सम्था प्रहार करेगी

बाहुम्

आर्म

अर्थात् बांह पर करो

इस आज्ञा पर दिया प्रहार करेगी

इस आज्ञा पर हिनी य रक्षण करेगी

शीर्षम्

हेड

अर्थात् सिर पर करो

इस आज्ञा पर सम्म रक्षण करेगी

इस आज्ञा पर सम्था प्रहार करेगी

शीर्षम्

हेड

अर्थात् सिर पर करो

इस आज्ञा पर सम्था प्रहार करेगी

इस आज्ञा पर सम्म रक्षण करेगी

बाहुम्

आर्म

अर्थात् सिर पर करो

इस आज्ञा पर द्वितीय रक्षणकरेगी

इस आज्ञा पर द्विया प्रहार करेगी–

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शीर्षम्
हेड
अर्थात् सिर पर करो

इस आज्ञा पर सप्तथा प्रहार करेगी
इस आज्ञा पर सप्तम रक्षण करेगी ॥

शीर्षम्
हेड
अर्थात् सिर करो

इस आज्ञा पर सप्तम रक्षण करेगी
इस आज्ञा पर सप्तथा प्रहार करेगी ॥

दक्षपार्श्वम्
राइट साइड
अर्थात् दहिने पार्श्व पर करो

इस आज्ञा पर षष्ठथा प्रहार करेगी
इस आज्ञा पर षष्ठ रक्षण करेगी

शीर्षम्
हेड
अर्थात् सिर पर करो

इस आज्ञा पर सप्तम रक्षण करेगी
इस आज्ञा पर सप्तथा प्रहार करेगी

शीर्षम्
हेड

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अर्थात् सिर पर करो

इस आज्ञा पर सप्तमा प्रहार करेगी — इस आज्ञा पर सप्तम रक्षण करेगी

दक्षपार्श्वम्

राइट् साइड्

अर्थात् दहिने पार्श्व पर करो

इस आज्ञा पर षष्ठ रक्षण करेगी — इस आज्ञा पर षष्ठ वा प्रहार करेगी

रक्षत

गार्ड

अर्थात् बचाओ

इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से काम करना चाहिये

वक्र खड्गम्

स्लोप सोर्डस

अर्थात् कांधे पर तिर्छी तलवार करो

इस आज्ञा पर भी पूर्वोक्त प्रकार से काम करना उचित है इस बात में विशेष ध्यान रखना चाहिये कि आक्रमण करने में जिस दिशा की ओर प्रहार कट किया जाता है उस दिशा की रेखा को कलाई संभवानुसार बचावे और रक्षण की प्रत्येक स्थिति को भी क्यों कि उस से च्युत होने से केवल यथेष्ट रक्षण किया जाता है और इस बात में भी सावधान ता रखनी चाहिये कि कलाई केहुनी और कंधे मड़

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और ध्यान रहै कि जिस में **प्रहार कट वेथन पाइन्ट** अथवा **आक्रमण अटाक** अथवा **रक्षण डिफेन्स** की किसी क्रिया को करने के योग्य होवें ॥

लकड़ी के साथ शिक्षा में यह अच्छा अभ्यास है कि **आक्रमण अटाक** और **रक्षण डिफेन्स** की प्रत्येक क्रिया प्रथमतः दो गति में की जाती है लकड़ी के द्वारा धीरे से उस भाग को स्पर्श करना चाहिये जिसका निर्देश भया है रक्षण केवल हेटू अर्थात् दो कहने पर किया जाता है इस तरह करने से शिक्षक इस बात के देखने के योग्य होता है कि आक्रमण करने वाले युगल अपना २ प्रहार और कोंच ठीक २ और नियमानुसार करते हैं अथवा नहीं और वे युगल जो कि रक्षण करने वाले हैं सो दृढ़ और यथार्थ स्थिति में आते हैं अथवा नहीं और इस बात के विचार करने में उस को अधिक सहायता प्राप्त होती है कि शस्त्रों को परस्पर किस जगह पार होना चाहिये ॥

पूर्वप्रकरण के अनुसार क्रिया होगी परन्तु संपूर्ण विपरीत होगा अर्थात् सम्मुखश्रेणी की जगह पृष्ठश्रेणी से प्रारंभ हो और जब संपूर्ण अभ्यासों में आज्ञावाक्य के द्वारा पूर्ण हो जावें तब उन को शीघ्र गति में करना चाहिये और शिक्षक अधोलिखित सूचना देने के पूर्व अपेक्षित अभ्यास के नाम का निर्देश करता है सूचना यह है **अभ्यसनीयांशेभ्यः दण्डाभ्यासः स्टिक ड्रिल बाइ प्रेकटिस डिविजन्स** अर्थात् अभ्यसनीय अंशों के द्वारा दण्डाभ्यास करो ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वेथन पाइन्ट सामान्यतः अत्यंत फलदायक होने के कारण कमी प्रहार कट की जगह व्यवहित होता है और जब कभी आक्रमण में अथवा बचाने वाले रक्षण गार्ड से कट पर फिरने में इस के करने का अवसर पड़ता है तब किया जाता है **प्रथम वेथन फर्स्ट पाइन्ट** द्वितीय पंचम और सप्तम रक्षणों से—अत्यंत शीघ्रता पूर्वक किया जाता है **द्वितीय वेथन** सेकंड पाइन्ट प्रथम और तृतीय रक्षणों से किया जाता है तृतीय वेथन थर्ड पाइन्ट चतुर्थ और षष्ठ रक्षणों से किया जाता है और इस प्रकार से, किया जाता है सो उसी रक्षण गार्ड से बचाया जाता है जो कि प्रहार कट के सामने किया जाता है और बांह को तुरंत फैला के उसी क्षण हूल मारा जा सकता है कि जिस क्षण **वेथन पाइन्ट** - दिशा के उचित रेखा में होवे ॥

मिथ्याक्रमण फेन्ट अर्द्ध प्रहार अथवा हूल मारना है और यह बात तब होती है जब कि एक पार्श्व में थम की दिखला के दूसरे पार्श्व पर आक्रमण करने की इच्छा होवे और जब शत्रु मिथ्या क्रमण करे तब यथार्थ प्रहार और वेथन करना चाहिये।

जब पूर्वोक्त शिक्षा में अच्छी तरह पूर्ण और परिपक्व होजावें तब उचित नियम के अनुसार खड्ग के साथ एकाकी युद्ध के सदृश युगलों के द्वारा परस्पर आक्रमण करते हुये स्वतंत्र अभ्यास करना चाहिये और इन प्रहार और हूलों को अपने विचार के अनुसार करना उचित है परंतु यथोल्लिखित नियमों पर विशेष ध्यान रखना चाहिये क्यों कि येही उनके पथदर्शक हैं ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लकड़ी के साथ खड्गाभ्यास के वास्ते नियमों का वर्णन -

प्रहार कट और वेधन प्रसङ्ग अर्थात प्रबल रूप से न करना चाहिये अथवा इस तरह से भी न करना चाहिये कि जिस में क्रोध अथवा कोप उत्पन्न होवे ॥

प्रत्येक प्रहार और वेधन जिस शत्रु पर किया जावे उसको चाहिये कि इस को इस तरह से लेवे कि उस लकड़ी को बायें हाथ से निकल जाने देवें और तुरंत ही आप दाव वाले रक्षण पर फिर चला आवे ॥

यदि युद्ध उचित अंतर की अपेक्षा अधिक अंतर पर से प्रारंभ भया हो तो दोनों दलों को चाहिये कि सूचना के द्वारा उचित अंतर पर आ जावें कि जिस में अकस्मात किसी पर आक्रमण न होवे ॥

दो प्रहार अथवा वेधन एकही स्थल पर न करना चाहिये अथवा यदि शत्रु उसी समय इन में से कोई करे तो ऐसी अवस्था में तृतीयस्थिति से जो प्रहार कट किया जावेगा सो फलोत्पादक समझा जावेगा ॥

किसी प्रहार अथवा वेधन से फिरना न चाहिये क्यों कि ऐसा करने से वह रक्षा युक्त होता है ॥

संपूर्ण प्रहार रक्षणीय स्थिति से करना उचित है और ज्यों ही प्रहार अथवा वेधन हो चुके त्योंही उस से रक्षण की स्थिति पर आने के लिये बड़ी सावधानता रखनी चाहिये ॥

खड्गभेद के बिना कभी अभ्यास न करना चाहिये जैसा कि खड्ग की जगह लकड़ी का प्रयोग भया है और उस लकड़ी के उस भाग से जो कि धारा के सदृश है यदि प्रहार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कर किया जावे तो वह उत्तम और फलदायक समझा जाता है और जो लकड़ी प्रबल न होवे उस से खड्गों के साथ युद्ध में आक्रमण अथवा रक्षण की कोई क्रिया न करनी चाहिये॥

६—छटवां प्रकरण

सामान्य नियम और शिक्षा के विषय में

खड्गाभ्यास में सात प्रहार अथवा धारा की दिशा हैं और इतने ही संख्यात्मक रक्षण अथवा बचाने वाली स्थिति है वेधन अथवा कोंच नखों को ऊपर अथवा नीचे करके किया जाता है और धार की गति मण्डल रूप से होती है जिसको कि प्रारक्षण पेरी कहते हैं और इसी वास्ते जो कोई आक्रमण अटाक अथवा रक्षण डिफेन्स किये जाते हैं वे केवल पूर्वोक्त गतियों में ही से क्रियापूर्वक आश्रयण में किये जाते हैं अथवा उन के योग से किये जाते हैं॥

खेंचा खेंची में जो कि आक्रमण के पूर्व शत्रु के साथ खड्गों के मिलाने का सामान्य कार्य है उस में धार पर थोड़ा बल देना चाहिये कि जिस में हस्त अथवा कलाई किसी क्रिया के करने में अत्यंत नमनीय होवें यद्यपि रक्षण अभ्यंतरीय रक्षण अथवा बाहरी रक्षण भी समय पर कभी २ बचाव करते हैं पर तौभी वे आक्रमणीय अथवा रक्षणीय गतियों की केवल तैयारी समझे जाते हैं आक्रमण के योग्य वेधनों के अनुसार अंतिम विषय भिन्न होते हैं॥

संपूर्ण आक्रमणों में चाहे प्रहार कर होवे अथवा वेधन प्रगट होवे पर गति बल के अनुसार बढ़नी चाहिये अंत में अधिक बल लगाना उचित है और यही नियम द्वितीय सेकेन्ड अर्थात्

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दूसरी और तृतीय गार्ड अर्थात् तीसरी स्थिति पोज़िशन् में लंबा कदम लेने में भी अनुसूत होता है परंतु इन स्थितियों से फिर आने में विपरीत ध्यान रखना चाहिये अर्थात् इस क्रिया करने में पहिले जलदी करनी चाहिये और इस विषय में शत्रु पर दृष्टि रखने के सेवाय और कोई बात अधिक उपकारक नहीं है पर तो भी शत्रु की कलाई की गति पर ध्यान रखना उचित है और शत्रु के जिस अंग पर तुम प्रहार अथवा कोच देने को चाहते हो उस जगह को कनखी से देखा करो पर इस बात में सावधानता रखनी चाहिये कि अपनी तलवार पर कभी न दृष्टि जाने पावें क्यों कि जिस जगह तुम प्रहार किया चाहते हो उसी जगह वह बराबर पहुंचे गी॥

यद्यपि संख्या के अनुसार प्रत्येक प्रहार कट के वास्ते प्रत्येक **रक्षण गार्ड** हैं पर तोभी रक्षण करने वाले युगल को सर्वदा उसी का अनुसरण करना कुछ आवश्यक नहीं है क्यों कि सिपाही लोग दूसरे **रक्षण गार्ड** के द्वारा अपने को अंत शीघ्रता और सफलता पूर्वक वार वार बचाने के योग्य हुये हैं जैसा यदि कोई छह प्रहार कट सिक्स अर्थात् छटवां काट शरीर पर करे और उस का शत्रु षष्ठ रक्षण सिक्स्थगार्ड अर्थात् छटवें रक्षण के द्वारा बचके प्रथम प्रहार कट वन अर्थात् पहिला काट छाती पर करे तो उस अवस्था में पंचम रक्षण फिफ्थगार्ड अर्थात् पांचवां बचाव रक्षण की शीघ्रतम किया है परंतु यदि शत्रु द्वितीय रक्षण सेकन्ड्गार्ड के द्वारा पहिले बच के तब प्रथम प्रहार कट वन करे तो इस अवस्था में प्रथम रक्षण फर्स्टगार्ड फटपट हो सकता है इसी वास्ते प्रथम फर्स्ट अर्थात् पहिला और पंचम फिफ्थ अर्थात्

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पांचवां रक्षण जिस किसी जगह से अर्थात् नीची या ऊंची से वे दिये जावे पर ये प्रत्येक प्रथम और पंचम प्रहारों को बचा सकते हैं द्वितीय और षष्ट रक्षण ये प्रत्येक प्रथम और षष्ठ प्रहारों को बचा सकते हैं और यदि तृतीय अथवा चतुर्थ रक्षण गाई टङरी की रक्षा के वास्ते अपेक्षित होवें तो बांह को ऐसा विस्तृत करो कि जिस में फलका प्रबल भाग शत्रु के शस्त्र के दुर्बल भाग से संसक्त होवे परंतु यह बात अच्छी तरह मन में रखना चाहिये कि जब उचित अंतर पर हैं तब टङरी के संघर्षण प्रहार में अपनी निज टङरी को उठाने के उसी समय प्रहार करो तो रक्षण अत्यंत फलदायक और उपकारक होता है विशेष करके कोई लंबा आदमी जब किसी छोटे कदके मनुष्य के साथ उद्युक्त होता है अथवा एक हाथ के अंतर पर से उद्युक्त होता है तब वह लंबे आदमी के पास उसका शत्रु नहीं पहुंच सकता पर वह लंबा आदमी उस छोटे आदमी के पास पहुंच सकता है॥

रक्षण की विद्या अपनी निज स्थिति के बल पर उतनी आश्रित नहीं है कि जितनी जिस दिशा की ओर अपना शत्रु रोकने की उपाय क्रम रखना हो उस दिशा की ओर निश्चित रूप से झट पट कदम लेने पर आश्रित है यह बात विशेष कर के वेधन पाइन्ट अर्थात् हूल मारने के बचाव के वास्ते होती है अर्थात् प्रथम और तृतीय वेधन पाइन्ट अर्थात् हूल के रोकने के वास्ते प्रथम तृतीय और पंचम रक्षण अत्यंत फलोत्पादक हैं इसी तरह द्वितीय वेधन के वास्ते द्वितीय चतुर्थ और षष्ठ रक्षण लाभ कारक हैं परंतु इस बात के वास्ते कलाई पहिले ही से ऐसी स्थिति पर रहे कि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जिस में अपेक्षित रक्षण शीघ्रता पूर्वक बन सके द्वितीय पंचम और सप्तम रक्षणों से फिर के अत्यन्त शीघ्रता पूर्वक **प्रथम वेधन फर्सट पाइन्ट** अर्थात् पहिली हूल मारी जा सकती है प्रथम और तृतीय रक्षणों से **द्वितीयवेधन सेकन्डपाइन्ट** दिया जाता है चतुर्थ और पंचम रक्षणों से **तृतीयवेधन थर्ड पाइन्ट** मारा जाता है॥

यदि छोटे खड्ग के साथ अवरोध होवे तो तृतीय और चतुर्थ प्रहार कट करना चाहिये और उन प्रहारों को बांह पर करने से प्रहार कट के फलोत्पादक होने में प्रत्येक प्रकार की संभावना है क्यों कि धार के भ्रमण में वह सर्वदा आजाता है और शत्रु के यथेष्टरूपसे बढ़कारके अपने शरीर के पास पहुंच कर वेधन करने के पूर्व किये जाते हैं यदि पूर्वोक्त प्रहार कट शीघ्रता पूर्वक सतत रूप से दिये जावें तो ये छोटे खड्ग के सामने बढ़ने में सर्वदा लाभ कारक होते हैं क्यों कि उन से आक्रमण अटाक और रक्षण डिफेनस एकही समय में हो सकते हैं परन्तु यदि शत्रु अत्यंत चतुर और अपनी गति में अत्यंत शीघ्र होवे तो प्रहार कट करते २ उचित अंतर का ध्यान रख के सावधानता पूर्वक पीछे हटो कि जिस में प्रत्येक प्रहार ठीक २ उसके बांह के अग्र भाग पर पहुंचे॥

द्वितीयवेधन सेकन्डपाइन्ट अर्थात् दूसरा हूल यदि प्रथम क्रिया के सदृश किया जावे तो इस वेधन के करने में अत्यंत सावधानता रखनी चाहिये क्यों कि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इस क्रिया में कलाई बे शस्त्र होने के योग्य स्थिति में रहती है इस स्थिति का अनुसरण विशेष करके फिरने में रखना चाहिये अथवा भितरी या बाहरी रक्षणों से किसी मिथ्याक्रमण के बाद रखना चाहिये यदि बहिः रक्षण से होवे तो मिथ्या तृतीय वेधन थर्ड पाइन्ट नीचे की ओर और बांह के ऊपर द्वितीय वेधन सिकन्ड पाइन्ट मारो यदि अंतः रक्षण इन् साइड गार्ड से होवे तो मिथ्या द्वितीय प्रहार करो और तलवार को बराबर तब तक लिये जावे कि जब तक उसका अग्र भाग विराम के बिना बांह के नीचे शरीर पर द्वितीय वेधन सेकन्ड पाइन्ट देने के वास्ते यथेष्ट रूप से नीचे न हो जावे ॥

तलवार के अंदाजे के भीतर भी प्रहार कट का अभ्यास करना चाहिये परंतु यदि कोई शत्रु अपने आक्रमण करने में पार्श्व की ओर रक्षण करने में कट पर कलाई को फेर के अच्छी तरह से अवरोध नहीं कर सकता तो बाहरी रक्षणों से अंतः प्रहार किये जाते हैं और अंतः रक्षणों से बाहरी प्रहार किये जाते हैं द्वितीय और चतुर्थ रक्षणों के बाद दो अग्रिम प्रहार कट अत्यंत फलदायक होते हैं अर्थात् द्वितीय रक्षण से गले पर पंचम प्रहार और चतुर्थ से टङ्-री पर प्रहार करना चाहिये खिंच वाला प्रहार लिखित प्रकार के अनुसार करना चाहिये हूलवाला प्रहार फलके धार को फलके दुर्बल भाग से ले प्रबल भाग तक जोर से आगे की ओर दबाने से होता है और यह प्रहार तब किया जाता है जब कि शत्रु इस के वास्ते खुला हुआ है अथवा शत्रु के दुर्बल अवरोध के बाद किया जाता है ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दिग् रेखा सामान्य अर्थ में पाद शरीर और बाज़ू के उस स्थिति को जनाती है जो कि **रक्षण गार्ड** के उचित स्थिति पर एक रूप से एक सरल रेखा में होती है कभी २ यह **रक्षण गार्ड प्ररक्षण** पेरी और वेधन में बांह और खड्ग के अग्रभाग की ओर होती है यदि तुम अपने रक्षणों को बहुत विस्तृत करो गे तो तुम दिग् रेखा से भूले हुवे कहे जावगे और इसी वास्ते तुम को अपने शरीरका कुछ अंश खुला हुआ अरक्षित रखना पडेगा और यदि तुम अपने को रक्षित करने बिना और शत्रु के फल को रोकने बिना किसी शत्रु पर हूल मारो गे तोभी तुम दिग् रेखा से भूले हुये कहे जाव गे और जब अपने शत्रु के शरीर पर दृढ़ता पूर्वक वेधन नहीं करते तब तुम दिग् रेखा से अत्यंत भूले हुवे कहे जाव गे॥

लङ्घन लंज उस कार्य को कहते हैं कि जिस कार्य के द्वारा दिग् रेखा पर अपने फलांग के एक विस्तार से किसी शत्रु के शरीर पर **प्रहार** कट अथवा **वेधन** करने के वास्ते पहुंच सकते हैं॥

फिरना वह कार्य है कि जिसके द्वारा अपने शत्रु पर फलांग मार करके काम करने के बाद **रक्षण** गार्ड की स्थिति २ हीन होती है शीघ्रता और सुगमता पूर्वक फिर के रक्षण करना यह बात अपने निज रक्षा के वास्ते अत्यंत उपकारक है। यदि संगीन अथवा भाले के साथ मुकाबला होवे तो इन शस्त्रों की लंबाई के द्वारा तुमारा शत्रु तुम को इतनी दूर रख सकता है कि जहां से तुम उस के पास नहीं पहुंच सकते और तुम उस के पहुंच में हो इस वास्ते तुमको उसके वर्द्धित कलाई पर आक्रमण करने के वास्ते प्रयत्न करना चाहिये अथ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वा **प्रथम रक्षण पेरी** अथवा **चतुर्थ रक्षण** फोर्थगार्ड के द्वारा उसके शस्त्र को हटा के उसके पास पहुंचने के वास्ते प्रयत्न करो परंतु पंचम रक्षण फिफथगार्ड अधिक फलदायक होता है क्यों कि वह उस को रोकने के वास्ते अथवा अपने खड्ग को खुला ले जाने के वास्ते जो कि उसके हाथ से बाहर फेंका जाता है कम् शक्ति रखता है अथवा उस शस्त्र को तुम अपने वाम हस्त से पकड़ो और वह यदि दहिनी ओर हटाया जावेगा तो कठिनता से पकड़ा जायगा क्यों कि तुमारा रक्षण सर्वदा दहिनी ओर की अपेक्षा बाईं ओर अधिक फलदायक होता है परंतु यदि वह उसको दोनों हस्तों से फेरे तो उसको दहिनी ओर उठादेना अति सुगम होता है और यदि तुम उस को बाईं ओर दबाओ तो अवरोध करने अथवा आप खुले हो जाने के वास्ते कम शक्ति रखता है इस के सेवाय तुमको तब अधिक फल यह है कि उसको वाम हस्त से पकड सकते हो पर दहिनी ओर इतने सुगमता से नहीं पकड सकते थे -

अश्वारोही शत्रु पर जब आक्रमण करते हो तब तुम को उसके बाईं ओर आक्रमण करने का प्रयत्न करना चाहिये क्यों कि उस पार्श्व में वह स्वयं अथवा अपने घोडे को बचाने के वास्ते अल्प शक्ति रखता है और जितनी दूर दहिनी ओर आक्रमण कर सकता है उतनी दूर बाईं ओर नहीं घोडे पर आक्रमण करने में भी तुम उसको अवश्य कर सकते हो और यद्यपि उस की रक्षा वस्तुतः सवार के आधीन है पर तोभी वह उसके आधीन कम रहेगा यह फल तुमको सर्वदा स्मरण रखना चाहिये कि एक ही क्षण में तुम उस के पहुंच के भीतर और बाहर होने की शक्ति रखते हो जब घोडे की गतियां इस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के वास्ते अत्यंत मंद और दुखदाई हो जाती है तब यदि पैदल खड्गीय मनुष्य उचित ढिठाई रखता होवे तो अपने सवार शत्रु पर निश्चिन्त रूप से फल उठा सकता है ।

यद्यपि खड्ग के निष्कासन के वास्ते नियत प्रकार लिखा है पर तोभी कभी २ एक बारगी रत्नगा गाई पर आने का भी अभ्यास करना चाहिये और यदि कोई काम अपेक्षित होवे तो उसके परेट संबंधी कर्तव्य क्रिया प्रभृति के बिना किये करना चाहिये क्यों कि इसके द्वारा खड्ग संबंधी पुरुष को किसी शत्रू पर आकस्मिक आक्रमण करने की सज्जता होती है ॥

जो पुरुष अभ्यास संबंधी अनुभव रखते हैं उनको ऐसा स्थल प्रायः ध्यान पड़ता है शिक्षकों को चाहिये कि शिक्षा में प्रायः संभवानुसार नवीन सिपाही के मन में उन विषयों को सामयिक नियमों के द्वारा बैठावे कि ये विषय अत्यंत उपयोगी होती हैं इन विषयों के वर्णन का समय बहुधा तब होता है जब कि सिपाही लोग आरंभ करते हैं क्यों कि गुल्म स्काउ को किसी स्थिति अथवा गतियों में बहुत काल तक न खड़ा करना चाहिये और जब कुछ नवीन सिपाही औरों से शिक्षा में बहुत न्यून होवें तो उस अवस्था में और सिपाहियों को खड़ा करा देना चाहिये और उन लोगों को जो कि भूलते हैं शुद्ध करना उचित हैं ॥

७-सातवां प्रकरण

अध्यक्षों की सलामी के वर्णन में +

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अध्यक्षों के चाहिये कि एक दूसरे से चार कदम के अंतराय र पंक्ति में स्थित होवें और **स्टैंड एट ईज़** अर्थात आराम की स्थिति से खड़े होवें अर्थात खड्ग का अग्र भाग भूमी की ओर दोनों पदों के बीच में धार दहिनी ओर और बां हस्त दहिने हस्त को आच्छादित किये हुवे रहे ॥

सावधानी

अटेन् शन्

अर्थात सावधान हो

इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से **तोलयत खड्ग** के री सोर्डस् करें ॥

एष्टअग्रेयनरम्

रिअर रांक टेक ओपिन् आर्डर

अर्थात पिछिली श्रेणी खुलो

इस आज्ञा पर **प्रकाशयत खड्गम् रिकवरसोर्डस्** करें और बाईं को अगाड़ी की ओर तिर्यग रूप से एक कदम लेके दूसरे युगल के सामने जावें कि जिस में प्रथम युगल का अग्रभाग खाली हो जावे

व्रजन

मार्च

अर्थात चलो

इस आज्ञा पर सामने की ओर तीन कदम बढ़ो और तलवा र को **तिर्यग पोर्ट** की स्थिति पर लाओ धार तिर्यग रूप

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

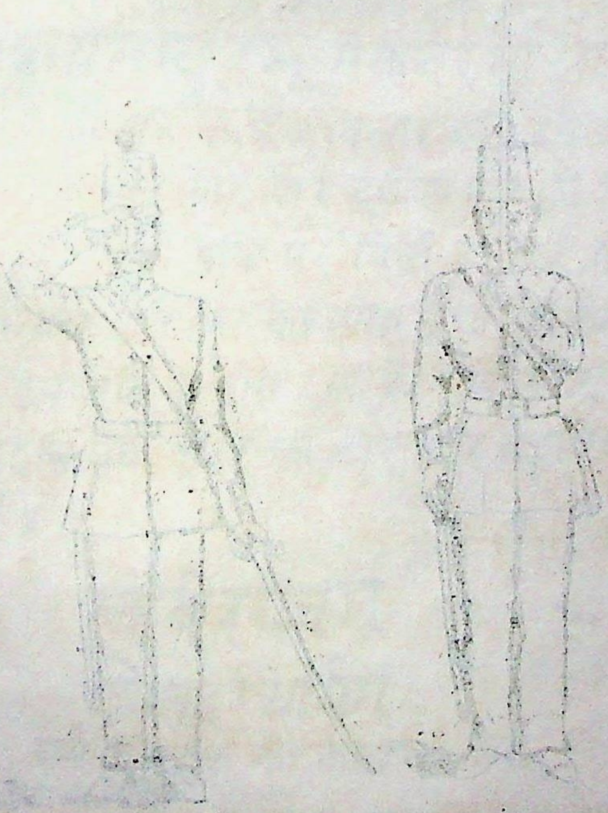

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अफ्सरों की सलामी

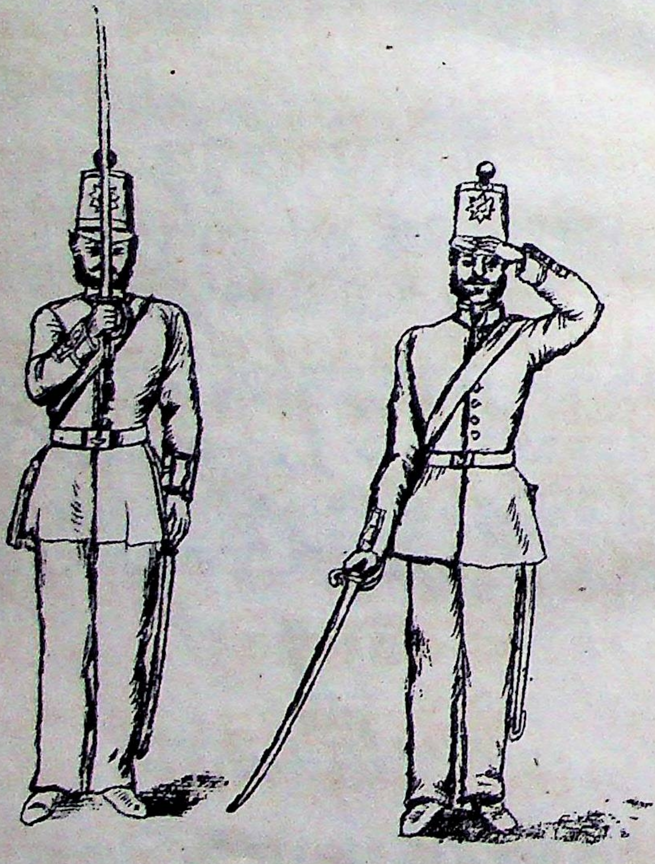

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से शरीर के आर पार रहे धार उपर की ओर रहे और बाह विस्तृत प्राय: रहे बाईं किहुनी झुकी हुई हो हाथ इतना ऊंचा होवे कि जिस में मोढे के सामने रहे धार अंगुष्ठ और तर्जनी अंगुली के बीच में पकड़ी हुई रहे अंगुलि पर्व सामे और केहुनियां पार्श्व से मिली हुई रहें ॥

नमोरयंत्रेषा

प्रेजेएट आर्मस

अर्थात् बंदूक सलामी करो

इस आज्ञा पर रफल के द्वितीय क्रिया के द्वारा तलवार को **प्रकाशायनत्वरूम** रिकवर सोईस की स्थिति पर लाओ और बंदूक रक्षा ति से तलवार की बांह के पूर्ण विस्तार द्वारा दहिनी ओर नीचे झुकाओ नोक बाईं ओर और दक्षिण पाद की दिशा में झुकी हुई रहे केहुनी पार्श्व पर मिली हुई रहे तिस के बाद उसी समय वाम हस्त को सीधा मोढे के सामने उठा के चक्र रूप गति के द्वारा हस्त को साफे के अग्रभाग पर लाओ अंगुलि पर्व ऊपर की ओर और अंगुलियां खुली हुई रहें ॥

स्कंधेरयंत्रम्

शोल्डर आर्मस्

अर्थात् बंदूक को कांधे पर करो

इस आज्ञा पर रफल के प्रथम क्रिया के द्वारा तलवार को **प्रकाशायनत्वरूम** रिकवर सोईस की स्थिति प

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

र लाओ तिस के बाद द्वितीय क्रिया के द्वारा तिर्यग् पोर्ट पर लाओ ॥

पृष्ठश्रेणी योगः

रिअर रंक टेक क्लोज़ आर्डर

अर्थात् पिछली श्रेणी खुलो

इस आज्ञा पर **दक्ष पार्श्वे** राइट फेस होवें परं तु दहिना कदम ज्यों ही पीछे लावें त्यों ही **प्रकाशयत खड्गम्** रिकूवर् सोर्डस् करें ॥

व्रजत

मार्च

अर्थात् चलो

इस आज्ञा पर पीछे हट के **सम्मुख श्रेणी** फ्रण्ट रंक मिले और **सम्मुख** फ्रण्ट हो के **तोलयतखड्गम्** केरी सोर्डस् करें ॥

चलते समय सलामी तब प्रारंभ करना चाहिये जबकि द्रष्टा अध्यक्ष से दस कदम पर रहें और वह अध्यक्ष जो कि दहिनी ओर रहता है सलामी प्रारंभ करने के दो कदम एवंही वाम हस्त की अंगुलियों को उठा कर और अध्यक्षों को इशारा करता है इसके बाद हस्त को दहिनी ओर फैला के तलवार को उठाते हैं और हस्त के मण्डल रूप गति के द्वारा खड्ग को प्रकाशयत की स्थिति पर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

र लाते हैं और जिस के बाद उस हस्त को दहिने कंधे के पास लाते हैं उस जगह से वह नीचे की जाती है इसके बाद वाम हस्त को क्रमशः उठा के पूर्वोक्त प्रकार से साफे के अग्रभाग पर लाओ सलामी छ कदम में समाप्त होती है और वाम पाद से प्रारंभ होती है कवाइद के अभ्यास के वास्ते यह काम वक्ष्यमाण प्रकार से विभक्त होता है अर्थात् पहिले कदम में खड्ग दहिनी ओर उठाया जाता है दूसरे में **प्रकाशायन** रिकवर पर लाया जाता है तीसरे में दहिने कंधे के बराबर किया जाता है चौथे में खड्ग दहिनी ओर नीचे किया जाता है पांच वें में वाम हस्त उठाया जाता है और छठवें में साफे के अंत पर लाया जाता है ॥

जब द्रष्टा अध्यक्ष के पास पहुंचते हैं तब अपने सिर को थोड़ा सा उसकी ओर झुकावें और छ कदम में यह काम कर के पूर्ववत् इशारा पाने पर एक कदम में **प्रकाशायन** रिकवर और दूसरे में तिर्यग पोर्ट करें ॥

चलने समय अथवा अभ्यास में तलवार हस्त के पूर्ण विस्तार तक करनी चाहिये मुठिये की ताड़ी अंगुलियों के भितरी ओर रहे धार का पृष्ठ भाग कंधे के निम्नस्थान पर रहे ॥

शुभमस्तु

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

खड्गाभ्यासः समाप्तः

SPS
613.7 D 97 K
6563

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE